''क्या ? क्या जनरल साहब के भाई साहब पधार चुके हैं ? वाल्दीमीर इवानिच ?'' आह्लाद से सन आप अपने चेहरे को समेटते हुए, ओचुमेलॉव ने हैरानी के भाव प्रदर्शन के साथ कहा – ''कितना अदभुत संयोग रहा। और मुझे मालूम तक नहीं। अभी कुछ दिन रुकेंगे ?''

''हाँ ! यह सही है।''

''तनिक सोचो ! वे अपने भाई साहब से मिलने पधारे हैं और मैं इतना भी नहीं जानता। तो यह उनका कुत्ता है। बहुत खुशी हुई... इसे ले जाइए... यह तो एक अति सुंदर 'डॉगी' है। यह इसकी उँगली पर झपट पड़ा था ? हा-हा-हा ! बस-बस ! अब काँपना बंद कर भाई ! गर्र-गर्र... नन्हा-सा शैतान गुस्से में है... बहुत खूबसूरत पिल्ला है ।''

प्रोखोर कुत्ते को सँभालकर काठगोदाम से बाहर चला गया। भीड़ ख्यूक्रिन की हालत पर हँस दी।

''मैं तुझे अभी ठीक करता हूँ !'' ओचुमेलॉव ने उसे धमकाया और अपने लंबे चोगे को शरीर पर डालता हुआ, बाज़ार के उस चौराहे को काटकर अपने रास्ते पर चला गया।

### शब्दार्थ-टिप्पण

**पेचीदा** जटिल, कठिन **जुर्माना** आर्थिक दण्ड **पिल्ला** कुत्ते का बच्चा **रिपोर्ट** विवरण **हरजाना** अर्थ-दण्ड **बकवास** व्यर्थ की बातें **बेवकूफ** मूर्ख **बरदाश्त** सहन **औलाद** संतान **आह्लाद** आनंद, प्रसन्नता **बावर्ची** रसोइया

### स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**

(1) ओचुमेलॉव कौन था ?

(2) कुत्ते ने किसकी उँगली में काट लिया था ?

(3) भीड़ कहाँ इकट्ठी हो गई थी ?

(4) ख्यूक्रिन कौन था ?

(5) जनरल साहब के बावर्ची का क्या नाम था ?

(6) कुत्ता किस नस्ल का था ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :**

(1) काठगोदाम के पास भीड़ क्यों इकट्ठी हो गई थी ?

(2) उंगली ठीक न होने की स्थिति में ख्यूक्रिन का नुकसान क्यों होता ?

(3) कुत्ता कहाँ और क्यों किकिया रहा था ?

(4) बाजार के चौराहे पर खामोशी क्यों थी ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक लिखिए :**

(1) येल्दीरीन ने ख्यूक्रिन को दोषी ठहराते हुए क्या कहा ?

(2) ख्यूक्रिन ने ओचुमेलॉव को उंगली ऊपर उठाने का क्या कारण बताया ?

(3) भीड़ ख्यूक्रिन पर क्यों हँसने लगी है ?

(4) ओचुमेलॉव के चरित्र की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

**4. सविग्रह समास का नाम लिखिए :**

चौराहा, दुःखदग्ध, प्रतिवर्ष।

**5. शब्दसमूह के लिए एक शब्द लिखिए :**

(1) सोना-चाँदी के आभूषण बनाने वाला -

(2) आदमियों को खा जाने वाला जानवर -

(3) सात दिनों का समूह -

(4) कुतिया का छोटा बच्चा -

**6. समानार्थी शब्द लिखिए :**

जमीन, कुत्ता, नतीजा, उदास।

**7. विरोधी शब्द लिखिए :**

झूठ, गरमी, सम्मत, मालिक, संयोग, विश्वास, जिंदगी, आवारा।

**8. संधि-विच्छेद कीजिए :**

संयोग, दुष्ट, सज्जन।

**9. सही जोड़े मिलाइए :**

| **अ** | **ब** |
|---|---|
| (1) ओचुमेलॉव | सुनार |
| (2) ख्यूक्रिन | जनरल साहब का बावर्ची |
| (3) येल्दीरीन | जनरल साहब के भाईसाहब |
| (4) प्रोखोर | पुलिस इन्सपेक्टर |
| (5) वाल्दीमीर इवानिच | सिपाही |

**10. निम्नलिखित वाक्य कौन कहता है ? लिखिए :**

(1) ''हुजूर ! यह तो जनशांति भंग हो जाने जैसा कुछ दीख रहा है।''

(2) ''यह आवारा कुत्ता है।''

(3) ''मैं तुझे अभी ठीक करता हूँ।''

(4) ''येल्दीरीन, मेरा कोट उतरवाने में मेरी मदद करो।''

(5) ''मेरा काम भी एकदम पेचीदा किस्म का है।''

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- विद्यार्थी जारशाही शासन की कमियों की चर्चा कीजिए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- जारशाही शासन के संदर्भ में ''समरथ को नहिं दोष गुसाईं'' का अर्थ समझाएँ।

●

# 19 डेली पैसेंजर

**अरुण कमल**

(जन्म : सन् 1954 ई.)

हिन्दी साहित्य के इस यशस्वी कवि का जन्म बिहार में रोहतास जिले के नासरीगंज में हुआ था। इन्होंने अंग्रेजी में एम.ए. किया और पटना विश्वविद्यालय में अध्यापक के पद पर अपनी सेवाएँ देते रहे। जिन कवियों ने अपने पूर्ववर्ती कवियों की रूढ़ियों को तोड़ते हुए समकालीन कविता की नई भूमि निर्मित की, उनमें अरुण कमल प्रमुख हैं। अपने आसपास के परिवेश को पूरी ईमानदारी से प्रतिबिंबित करने वाले इस कवि की कविता में जीवन के प्रति गहरी प्रतिबद्धता के दर्शन होते हैं। इनकी भाषा में जन-जीवन के रंग है और एक आडंबरमुक्त बिम्बधर्मिता है तथा इनकी भाषा शब्दाडम्बर से मुक्त खड़ी बोली है।

जीवन और जगत में जो कुछ भी विशिष्ट है, उभरता हुआ है, उठता हुआ है, उन सबके प्रति मन में ललक है। अरुण कमल के पास सही राजनीतिक परिप्रेक्ष्य है। इनकी गणना अब प्रतिष्ठित, प्रगतिशील, कवियों में की जाती है। 'अपनी केवल धार', 'सबूत', 'इस नए इलाके में' इनके प्रमुख काव्य-संग्रह हैं। 'इस नए इलाके में' के लिए इन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त इन्हें भारतभूषण अग्रवाल, सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार, श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार, रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार एवं शमशेर सम्मान भी प्राप्त हो चुका है।

प्रस्तुत कविता में कवि ने कामगार औरत का बड़ा ही सटीक चित्र प्रस्तुत किया है। इस कविता में एक मार्मिक दृश्य है, लेकिन इस छोटे-से दृश्य में बड़ी गहरी कहानी है। एक औरत जो अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए नौकरी करने को विवश है। वह पूरे दिन काम करने के बाद शाम को अपने घर लौटते समय इतनी थकी हुई है कि ट्रेन में बैठते ही सो जाती है। कवि ने इस दृश्य को बड़ी गहरी सहानुभूति के साथ प्रस्तुत किया है।

---

मैंने उसे कुछ भी तो नहीं दिया
इसे प्यार भी तो नहीं कहेंगे
एक धुँधले-से-स्टेशन पर वह हमारे डब्बे में
चढ़ी
और भीड़ में खड़ी रही कुछ देर सीकड़ पकड़े
पाँव  बदलती
फिर मेरी ओर देखा

और मैंने पाँव सीट से नीचे कर लिये
और नीचे उतार दिया झोला
उसने कुछ कहा तो नहीं था

वह आ गयी
और मेरी बगल में बैठ गयी
धीरे से पीठ तख्ते से टिकायी
और लम्बी साँस ली
ट्रेन बहुत तेज चल रही थी
आवाज से लगता था
ट्रेन बहुत तेज चल रही थी
झोंक रही थी हवा को खिड़कियों की राह
बेलचे में भर-भर
चेहरे पर
बाँहों पर
खुल रहा था रन्ध्र-रन्ध्र
कि सहसा मेरे कन्धे से
लग गया
उस युवती का माथा
लगता है बहुत थकी थी
वह कामगार औरत
काम से वापस घर लौट रही थी
एक डेली पैसेंजर।

### शब्दार्थ-टिप्पण

**धुंधला** अस्पष्ट, हलका अँधेरा **झोला** थैली **रन्ध्र** छिद्र **बेलचा** मिट्टी-रेत, कोयला आदि उठाने का साधन **कामगार** काम करनेवाला, मजदूर।

### स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**

(1) कामगार औरत कहाँ से घर लौट रही थी ?
(2) मजदूर औरत ट्रेन के डिब्बे में क्या पकड़कर खड़ी रही ?
(3) कामगार औरत को जगह देने के लिए कवि ने क्या किया ?
(4) ट्रेन की गति का अहसास किस बात से हो रहा था ?
(5) अचानक कवि को अपने कंधे पर किसकी अनुभूति हुई ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :**

(1) मजदूर औरत को देखकर कवि के मन में किस प्रकार के भाव जाग्रत हुए ?
(2) तेज चलती हुई ट्रेन हवा को किस प्रकार झोंक रही थी ?

(3) कवि ने अपने पैर सीट से नीचे क्यों कर लिए ?

(4) मजदूर औरत कहाँ से वापस आ रही थी ? किस हालत में ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में लिखिए :**

(1) कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

(2) कामगार औरत की स्थिति को अपने शब्दों में लिखिए।

**4. निम्नलिखित के समानार्थी शब्द लिखिए :**

प्यार, धुँधला, लम्बी, सहसा, माथा।

**5. निम्नलिखित के विलोम शब्द लिखिए :**

प्रेम, भीड़, तेज, बहुत।

**6. सही विकल्प चुनकर काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :**

(1) और मैंने ........................ सीट से नीचे कर लिये।

(A) पाँव (B) हाथ (C) नाव (D) कान

(2) वह आ गयी और मेरी ......................... में बैठ गई।

(A) तरफ (B) बगल (C) महल (D) सरल

(3) लगता है बहुत ......................... थी।

(A) रुकी (B) थकी (C) जगी (D) पकी

(4) काम से वापस ........................ लौट रही थी।

(A) घर (B) दर (C) पर (D) सर

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- 'परिश्रम का महत्व' विषय पर दस-बारह पंक्तियाँ लिखिए।
- 'श्रम और थकान' पर अपने अनुभव व्यक्त कीजिए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- निरालाजी की 'तोड़ती पत्थर' कविता विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए दीजिए।

●

# 20 हानूश

भीष्म साहनी

(जन्म : सन् 1915 ई.; निधन : 2003 ई.)

इनका जन्म रावलपिंडी में हुआ था, जो आजकल पाकिस्तान में है। इन्होंने गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. किया और पंजाब विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। अंबाला, अमृतसर और दिल्ली में अध्यापन किया। 'विदेशी भाषा प्रकाशन गृह' मास्को में अनुवादक के रूप में काम किया। इनके कई कहानी-संग्रह और उपन्यास प्रकाशित हैं। 'तमस' उपन्यास पर इन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार मिला था। इसी नाम से इस पर एक सीरियल भी बना है। नाटककार के रूप में भी इनका महत्वपूर्ण स्थान है। इनके नाटक 'हानूश' और 'कबिरा खड़ा बज़ार में' के बिना हिंदी नाटक की सम्यक चर्चा संभव नहीं है।

यहाँ 'हानूश' के तीसरे अंक का दूसरा दृश्य दिया जा रहा है। इसमें हानूश नाम के एक ग़रीब कुफ़्लसाज़ यानी ताला बनानेवाले ने एक 'नायाब घड़ी' का आविष्कार किया, जिसका पुरस्कार उस देश के बादशाह ने ये दिया, '.... हानूश कुफ़्लसाज़ को उसकी आँखों से महरूम कर दिया जाय। उसकी दोनों आँखें निकाल ली जायें। उसकी आँखें नहीं होंगी, तो और घड़ियाँ नहीं बना सकेगा।'

तीसरे अंक के इस आख़िरी दृश्य में जब घड़ी बिगड़ जाती है, तो अंधा होते हुए भी दूसरों की मदद से उसे ठीक कर देता है। उसका शिष्य जेकब चला गया, ताकि घड़ी का भेद ज़िंदा रह सके, और यही सबसे बड़ी बात है।

---

## अंक-3 : दृश्य - 2

*[घड़ी की मीनार। दाएँ-बाएँ की खिड़कियों में से हलका-सा प्रकाश। मीनार के अन्दर अँधेरा है। अन्दर की तरफ़ से घड़ी की मशीन की झलक मिलती है। सीढ़ियों पर कदमों की आवाज़। मशालों की रोशनी मीनार के अन्दर पहुँचती है जिससे घड़ी के कुछेक पुर्ज़े नज़र आते हैं। एक अधिकारी और एक सरकारी कारिन्दे की निगरानी में हानूश को अन्दर लाया जाता है। अधिकारी और कारिन्दे के बीभत्स साए। उनके बीच एक कोने में खड़ा दुबला-पतला अन्धा हानूश।]*

**अधिकारी** : घड़ी तुम्हारे सामने है हानूश ! इसे तुम्हें ठीक करना होगा।

**हानूश** : तुम सचमुच समझते हो कि मैं इसे ठीक कर सकता हूँ ?

**अधिकारी 1** : बादशाह सलामत बहुत नाराज़ हैं, हानूश ! घड़ी के कारण शहर में यात्रियों का ताँता लगा रहता है। घड़ी बन्द हो जाए तो रियासत को बहुत नुकसान है। तुम्हें यह काम करना ही पड़ेगा जिसके लिए सरकार ने तुम्हें तलब किया है।

*[सिपाही का प्रस्थान]*

**हानूश** : क्या तुम सचमुच समझते हो कि मैं आँखों के बिना घड़ी को ठीक कर सकता हूँ ?

**अधिकारी 1** : इसकी मरम्मत तो तुम्हें करनी ही है।

**हानूश** : मुझे घड़ी के सामने ले चलो। घड़ी की बड़ी कमानी कहाँ पर है ?

**अधिकारी 1** : मैं क्या जानूँ, कमानी क्या होती है ! कौन-सी कमानी ?

**हानूश** : तुम मुझे घड़ी की मशीन के ऐन सामने ले चलो। बस, इतना ही, यही बहुत बड़ी मदद होगी ?

**अधिकारी 1** : आओ, मेरे साथ आओ।

*[सीढ़ियों पर कदमों की आवाज़। एक और सरकारी अधिकारी का प्रवेश।]*

**अधिकारी 2** : जेकब का कहीं पता नहीं चल रहा। उसे ढूँढ़ने के लिए आदमी भेजे गए हैं।

**अधिकारी 1** : *(हानूश से)* क्या तुम्हें भी मालूम नहीं कि जेकब कहाँ पर है ?

**हानूश** : सुबह के वक़्त जेकब मेरे साथ था। बाद में वह कहीं बाहर गया होगा। मुझे बताकर नहीं गया। *(हँसकर)* अन्धा आदमी क्या जाने-आँखोंवाले कहाँ रहते हैं, क्या करते हैं !

**अधिकारी 1** : तुम ज़रूर जानते हो, जेकब कहाँ पर है। तुम बताना नहीं चाहते, क्योंकि तुम घड़ी की मरम्मत करना नहीं चाहते। इसका नतीजा अच्छा नहीं होगा। *(अधिकारी 2 से)* तुम बूढ़े लोहार को ले आओ। मुझे पता चला है कि वह इसके लिए घड़ी के कल-पुर्ज़े बनाता रहा है। उसे पकड़ लाओ। *(हानूश से)* जेकब अगर लापता हो गया है तो उसकी जगह तुम जिसे चाहो बुला सकते हो। हम उसे तुम्हारी मदद के लिए पकड़ लाएँगे। लेकिन घड़ी की मरम्मत तो तुम्हें करनी ही होगी। *(अधिकारी 2 से)* शहर में मुनादी करा दो कि हानूश का शागिर्द जेकब, जहाँ भी हो, घड़ी की मीनार में पहुँच जाए।

*[अधिकारी 2 का प्रस्थान]*

**हानूश** : आप मुझे हाँकते हुए यहाँ तक ले आए हैं और यहाँ मैं घड़ी को देख तक नहीं सकता।

**अधिकारी 1** : कोई भी आदमी तुम्हारी मदद कर सकता है। कोई लोहार, कोई मज़दूर, जिसे तुम चाहो, बुला सकते हैं।

**हानूश** : आप ही मेरी मदद कीजिए।

**अधिकारी 1** : बोलो, क्या चाहते हो ?

**हानूश** : एक काम कीजिए।

**अधिकारी 1** : क्या है ?

**हानूश** : इधर मीनार के अन्दर कहीं पर, शायद दाएँ कोने में, औज़ारों का बक्सा रखा है। वह मिल जाए तो इधर उठा लाइए।

**अधिकारी 1** : *(बक्से को ढूँढ़ता है। औजार मिल जाते हैं।)* हाँ, है। यह रहा।

*[उठाकर हानूश के सामने ले आता है।]*

यह रहा तुम्हारा औज़ारों का बक्सा !

**हानूश** : ठीक है, शुक्रिया। अब आप बेशक तशरीफ़ ले जाइए। आप बेशक किसी भी आदमी को मेरी मदद करने के लिए भिजवा दें।

*[हानूश चुपचाप खड़ा रहता है। अधिकारी चला जाता है। हानूश मीनार में अकेला रह जाता है। एक ओर घड़ी के कलपुर्ज़े मशालों की अस्थिर रोशनी में चमक रहे हैं, दूसरी ओर हानूश, निपट अकेला उनके सामने खड़ा है।*

*कुछ देर खड़ा रहने के बाद हानूश झुककर, टटोलते हाथों से उसमें से बड़ी-सी हथौड़ी निकाल लाता है। अपनी अन्धी आँखों से कुछ भी न देख पाते हुए वह, अनुमान लगाता हुआ, दो-एक क़दम घड़ी की ओर आगे बढ़ जाता है।]*

**हानूश** : हथौड़े से कुछ तो टूटेगा। कोई पुर्ज़ा तो टूटेगा। किसी एक नाज़ुक पुर्ज़े पर भी इसका वार पड़ जाए तो घड़ी का काम-तमाम हो जाएगा। अगर लीवर पर कहीं जा लगे तो इसकी मरम्मत फिर कभी नहीं हो सकेगी। यह ठीक है। पेंडुलम कहाँ पर होगा ? पेंडुलम मिल जाए तो उसके लीवर को तो खींचकर भी अलग किया जा सकता है।

*[टटोलता हुआ घड़ी को छू लेता है।]*

यह क्या है ?

*[घड़ी को छूते ही जैसे उसके तन-बदन को बिजली छू जाती है। वह घड़ी के पुर्ज़े को पकड़े रहता है। साथ वाले दो-तीन पुर्ज़ों को छूकर।]*

यह कौन-सा हिस्सा है ? हाँ, यह घड़ी ही है...यही मेरी घड़ी है।

*[सहलाते हुए-सा उसे पहचानने की कोशिश करता है।]*

इधर...इधर बड़ा चक्कर होना चाहिए। क्या यही चक्कर है ?

*(हाथ फेरता है)* यह रहा ! कैसा बेजान पड़ा है। ज़रा भी हरकत नहीं है।...धुरा मिल गया, यही है...अब पेंडुलम कहाँ हो सकता है...जेकब मेरे साथ होता तो झट से बता देता कि कौन-सा पुर्ज़ा कहाँ पर है। उसे सब मालूम है।...अच्छा है, वह यहाँ पर नहीं है, वरना मेरी हिम्मत बिलकुल जवाब दे जाती !...यह क्या है ? मैं घड़ी के पास कहाँ पहुँच गया हूँ ? यहाँ लीवर है क्या ? यही लीवर है क्या ?...लीवर...यही लीवर...अरे, लीवर टूटा हुआ है।...मैंने उस वक़्त कहा भी था कि लीवर कमज़ोर है, इसमें पीतल की मात्रा ज्यादा नहीं डालनी चाहिए थी। उसी वजह से यह जल्दी टूट गया है, यही लीवर है क्या?...हाँ, हाँ, यही लीवर है। यही...मुझे और कुछ नहीं चाहिए। लीवर मिल गया है। इसी को खींचकर तोड़ दूँ। यहीं पर घड़ी का भेद छिपा हुआ है। इसे तोड़ दूँ तो जैसे घड़ी का गला घोंट दिया। वह सदा के लिए मर जाएगी।...यह लीवर क्यों टूटा है ?...अगर दो साल में लीवर टूट सकता है तो इस घड़ी को बनाने से क्या लाभ ? मैंने क्या बनाया है ? कोई नौसिखुआ भी घड़ी बनाएगा तो ऐसी बेवकूफ़ी नहीं करेगा...शायद यहाँ से टूटा है।...जेकब होता तो झट से बता देता, कहाँ से टूटा है, कैसे टूटा है। लीवर को मैं अपने जेब में रख लूँगा, एक निशानी के तौर पर। किसी को बताऊँगा नहीं कि लीवर टूटने पर घड़ी बन्द हुई है...मैं इसे अपने पास रखकर क्या करूँगा ? मुझे लीवर से क्या लेना-देना ! किसलिए अपने पास रखूँ ?...

*[सीढ़ियों पर कदमों की आवाज़]*

**आदमी** : हम क्या मदद करेंगे, हम जानते ही क्या हैं ! हाँ, हानूश अन्धा है न, शायद इसीलिए। ठीक है, ठीक है। समझा।

*[अन्दर आता है। इधर-उधर देखने के बाद]*

इधर तो बहुत कल-पुर्ज़े हैं। क्या यही घड़ी है ? वाह-वाह, यह तो बहुत बड़ी मशीन है ।

*[हानूश को देखने के बाद उसकी ओर बढ़ता है। हानूश का हाथ पकड़कर।]*

हानूश भाई, मुझे तुम्हारी मदद करने के लिए भेजा गया है। घड़ी बन्द हो गई। बहुत बुरा हुआ। इतनी मेहनत से तुमने बनाई थी...अरे भाई, तुम अन्धे हो गए, यह भी बहुत बुरा हुआ । तुम्हारे साथ बहुत जुल्म हुआ। जब हमें पता चला कि तुम अन्धे हो गए तो सच मानो, हमें बहुत दुःख हुआ। हम कहें, हानूश अपनी घड़ी को अब देख भी नहीं सकेगा। घड़ी बन्द हो गई क्या ? तुम्हें तो भगवान ने बहुत बड़ा हुनर दिया है। आँखें होतीं तो तुम उसे झट से ठीक भी कर लेते। हमसे जो कहो, हम करने को हाज़िर हैं। जब तुम्हें अन्धा किया गया तो मेरा छोटा भाई कहे – हाय-हाय, मेरी आँखें हानूश को मिल जाएँ। मेरी आँखें किस काम की। हानूश ने तो इतना बड़ा काम किया है। उसे तो आँखों की ज़रूरत है। हानूश भैया, तुम्हें नहीं मालूम, हम कितनी बार तुम्हारे हाथों में फूलों के गुच्छे दे गए हैं। सुबह तुम इधर आते हो न ? हम उस वक़्त काम पर जाते हैं। हम और लोगों के हाथ तुम्हारे हाथों में फूल रख जाते थे। आज घड़ी के सामने तुमसे मुलाकात हो गई।...तुम चुप क्यों हो ? दिल से दुःखी हो न, इसीलिए।...तुम्हें इस घड़ी पर भी गुस्सा आता होगा। जिससे मोह होता है, उसी पर सबसे ज़्यादा गुस्सा आता है। बताओ, हम तुम्हारी क्या मदद करें ?

**हानूश** : तुम कौन हो ?

**आदमी** : तुम मुझे नहीं जानते हानूश ! हम इधर ही रहते हैं, दस्तकार हैं। लोहारी का काम करते हैं ।...तुम तो इन पुर्ज़ों को हाथ लगाते ही समझ जाओगे। यह तो तुम्हारे हाथ की बनाई चीज़ है। इसे तो तुमने जन्म दिया है, इसके तो अंग-अंग से तुम वाकिफ़ हो।

*[हानूश घड़ी के पास जाकर उसे पकड़ता है। पहले तो पहिए को पकड़े रहता है, फिर उसे सहलाता है, उस पर हाथ फेरता है।]*

**आदमी** : जिस रोज़ घड़ी लगी थी, हम दिन-भर यहाँ मीनार के नीचे खड़े रहे। हर बार जब घड़ी बजती तो हमें जैसे बिजली छू जाती। मैं कहूँ, कैसी करामात है ! अपने-आप चलती है, अपने-आप बजती है।...

*[हानूश इस बीच चक्करों को हौले-हौले हिलाने-चलाने लगा है। धीरे-धीरे घड़ी के प्रति उसका मोह जागने लगा है।]*

**हानूश** : *(अपने से बात करते हुए)* यह छड़ कौन-सी है ?...और, इसी से वज़न बँधा है। समझा !...मैं छोटे चक्कर के पास खड़ा हूँ।

**आदमी** : कुछ चाहिए ? हम मदद करें ? हानूश भाई, तुम रोज़ इधर बाग़ में आते हो न। हम रोज़ तुम्हें देखते हैं। हमने अपनी घरवाली से कहा-तुम देखना, हानूश कुफ़्लसाज़ ने ऐसी चीज़ बनाई है जो सदियों तक चलती रहेगी। हम-तुम यहाँ नहीं रहेंगे, हानूश भी नहीं होगा मगर हानूश की घड़ी हमेशा बजती रहेगी।

*[हानूश थोड़ा-थोड़ा अपने-आप इधर-उधर चलने लगा है। कयास से पुर्ज़ों पर हाथ रखता है। किसी पुर्ज़े को पकड़कर हिलाता है। टिक्-टिक् की आवाज़ आने लगती है। उसे छोड़ देता है, टिक्-टिक् की आवाज़ बन्द हो जाती है।]*

**हानूश** : सुनो जी, कौन हो तुम ?

**आदमी** : कहो हानूश भैया, क्या है ?

**हानूश** : इधर नीचे की ओर तो देखो।

**आदमी** : यह कुछ रखा है, कोई घड़ी का हिस्सा है क्या ?

**हानूश** : उठाओ तो...*(हाथ में लेकर)* पेंडुलम है। लीवर टूटने पर पेंडुलम नीचे आ गिरा है। छड़ को ज़ंग लगा हुआ है। मैंने पहले ही कहा था, यहाँ सीलन बहुत है, पुर्ज़ों को ज़ंग लग गया है। न जाने और क्या टूट गया है !

*[नीचे झुककर पुर्ज़ों को टटोलता रहता है। फिर उठ खड़ा होता है और अपना दरबारी कोट उतारकर फेंक देता है और आस्तीनें चढ़ा लेता है।]*

तुम्हारे पास कोई कपड़ा है ? कोई चिथड़ा हो, ज़रा लाना तो...इधर औज़ारों का बक्सा रखा है, उसमें मिल जाएगा।...जिन पुर्ज़ों पर मैं हाथ रखूँ, उन्हें ज़रा पोंछते जाना। देखो, उन पर ज़ंग तो नहीं चढ़ा है...धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे, घड़ी के पुर्ज़े बहुत नाज़ुक होते हैं ।...

*[काम में खो जाता है।]*

इधर, दीवार के पास तेल का एक बर्तन रखा है। उसमें चिथड़ा भिगोकर तो मुझे देना, जल्दी...

*[धीरे-धीरे रोशनी मद्धिम पड़ती जाती है। खिड़की के बाहर हलका-हलका उजाला नज़र आने लगा है। हानूश काम में खोता जा रहा है।*

*फेड आउट।*

*फेड ऑन होने पर दिन चढ़ आया है। अन्दर भी रोशनी ज़्यादा है। रोशनी के दायरे में कात्या हानूश के पास खड़ी है। हानूश आस्तीनें चढ़ाए मशीन पर झुका हुआ है, फिर माथे का पसीना पोंछकर उठ खड़ा होता है।]*

**हानूश** : पहले तो मैंने समझा, कात्या, कि इसे किसी ने जानबूझकर तोड़ा है। मुझे शक था कि शायद गिरजेवालों ने शरारत की है। लीवर टूटा हुआ है। मुझे यक़ीन है, इसे ज़रूर किसी ने तोड़ा है। घड़ी को तोड़ना क्या मुश्किल काम है ? पर क्या मालूम, यह लीवर ही कमज़ोर निकला हो !...लगता है, हमें नया लीवर डालना पड़ेगा।

**कात्या** : *(अपनी डबडबाई आँखों को पोंछती है)* तुम फिर पहले की तरह बातें करने लगे हो, हानूश, मुझे अच्छा लग रहा है।

*[हँसकर आँसू पोंछती है।]*

**हानूश** : कात्या, तुम्हें एक बात बताऊँ...मैं तो यहाँ घड़ी को तोड़ने आया था। मैंने हथौड़ा उठाया भी मगर उसे चला नहीं पाया। कात्या, जब मैंने कामानी पर हाथ रखा तो तुम्हें क्या बताऊँ, मेरे सारे शरीर में झुरझुरी दौड़ गई। मुझे लगा, जैसे मेरा हाथ घड़ी के दिल पर जा पड़ा है-इसके बाद मुझसे घड़ी को तोड़ा ही नहीं गया...मेरा हाथ उठता ही नहीं था।...कात्या, यहाँ पर एक आदमी आया था। कहाँ गया ?

**कात्या** : कौन था ?

**हानूश** : मैं नहीं जानता, कौन था। कोई भोला-भाला-सा आदमी था। अधिकारी मेरी मदद के लिए उसे कहीं से पकड़ लाए थे। कोई लोहार था। मुझसे कहने लगा : 'तुम घड़ी के साथ कैसे रूठ सकते हो हानूश, तुम्हीं ने तो उसे बनाया है। बनानेवाला भी कभी अपनी चीज़ को तोड़ता है !' उसकी बातें सुनकर मुझे शर्म-सी महसूस होने लगी, कात्या ! मैं अपने को बहुत छोटा महसूस करने लगा। और फिर, मैंने अपने लिए तो घड़ी नहीं बनाई थी न, कात्या, यह तो सबकी चीज़ थी। एक बार बन गई तो सबकी हो गई, मेरी कहाँ रह गई ! मैं कहूँ, लोग तो मुझे घड़ी के लिए आशीर्वाद दे रहे हैं, मेरे हाथों में फूलों के गुच्छे रख जाते हैं और मैं उसे तोड़ने जा रहा हूँ ? यह कितनी ओछी बात है ! मेरा दिल भर-भर आया कात्या, तुम्हें क्या बताऊँ !...

**कात्या** : वह आदमी नहीं आता तो भी तुम वही कुछ करते जो तुमने किया।

**हानूश** : और कात्या, मुझे लगने लगा, जैसे मैं घड़ी के एक-एक पुर्ज़े को देख सकता हूँ। वह अपने सभी कल-पुर्ज़ों के साथ मेरी आँखों के सामने फिर से आ गई है, जैसे पहले हुआ करती थी । और मुझे लगा, जैसे मेरे हाथ बढ़ाने भर की देर है और मैं जिस पुर्ज़े को छूना चाहूँ, छू सकूँगा । मुझे लगा, जैसे मैं अन्धा नहीं हूँ।...मैं भी कैसा हूँ, अपनी ही लगाए जा रहा हूँ। यान्का बिटिया कैसी है ? जेकब लौटा या नहीं ?...क्या सचमुच...*(धीमी आवाज़ में)* क्या सचमुच वह शहर में से निकल गया है ? वह घड़ी का सब काम जानता है, सब समझता है। मेरे पास होता तो उसकी बड़ी मदद होती। लेकिन उसके बिना भी घड़ी ठीक कर लूँगा। वह शहर में से निकल गया, अच्छा ही हुआ।

**कात्या** : तुम कुछ खा लो। मैं तुम्हारे लिए खाना अभी लाई हूँ। बैठो-बैठो, थोड़ा खा लो।

*[हानूश खाने पर बैठता है। कात्या उसके हाथ में लुक्मा तोड़-तोड़कर देती है। धीरे-धीरे रोशनी बुझ जाती है...।*

*फेड आउट।*

*फेड इन। मीनार के बाहर फिर अँधेरा है। अन्दर दो मशालों की रोशनी। रोशनी के वृत्त में बूढ़ा लोहार हानूश के पास खड़ा है। हानूश घड़ी पर काम कर रहा है।]*

**हानूश** : घड़ी बनाने में बहुत-सी भूलें हुई बड़े मियाँ ! हमने कई बातों में जल्दबाजी की, वरना दो साल में घड़ी बन्द क्यों हो जाए ? तुम एक काम करो !

**बूढ़ा लोहार** : कहो हानूश, क्या है ?

**हानूश** : तुम एक बार उस बुजुर्ग हिसाबदान के पास जाओ। उनसे कहो, अगर आ सकें तो एक बार आ जाएँ, मैं उनसे मशविरा करना चाहता हूँ। अब घड़ी में एक-दो तबदीलियाँ लाना ज़रूरी हो गया है।

**बूढ़ा लोहार** : मुझे उम्मीद नहीं है कि वह आएँ।

**हानूश** : क्यों ? आएँगे क्यों नहीं ?

**बूढ़ा लोहार** : जब से तुम्हारी आँखें निकलवाई गई हैं, रियासत-भर में दहशत फैल गई है। सभी दस्तकार लोग घड़ी से दूर रहना चाहते हैं।

**हानूश** : आप भी बड़े मियाँ ?

*[सोच में पड़ जाता है।]*

**बूढ़ा लोहार** : यह सवाल तुम मुझसे पूछोगे हानूश ? न मैं घड़ी से दूर हो सकता हूँ, न तुमसे।

**हानूश** : *(ठंडी साँस भरकर)* नया लीवर बना लाए हो ? मुझे दो। देखूँ तो ! इसमें तो पीतल की मात्रा अधिक नहीं है न ? आपने देख-परख लिया है न ? आप नहीं आते तो मैं फिर मँझधार में खड़ा था, बड़े मियाँ...!

*[मशीन पर झुक जाता है।*

*देर तक प्रकाश-वृत्त में हानूश की झुकी पीठ नज़र आती रहती है। दो-एक बार वह पसीना पोंछता है, फिर काम में खो जाता है। उसके पास खड़ा बूढ़ा लोहार उसे किसी-किसी वक़्त औज़ार देता रहता है।*

*फेड आउट।*

*फेड ऑन होने पर फिर से रोशनी हानूश की पीठ पर पड़ रही है।*

*थोड़ी देर तक हानूश घड़ी पर झुका रहता है, अब सहसा घड़ी की टिक्-टिक् सुनाई देने लगती है।]*

**हानूश** : *(उठ खड़ा होता है। मशीन पर अभी भी काम करते हुए)* लगता है, मुझे सारी-की-सारी घड़ी नज़र आने लगी है। आँखों के सामने एक-एक पुर्ज़ा जैसे चमक रहा है। जेकब पास में होता तो उससे कहता-कहो जेकब, किस पुर्ज़े पर हाथ रखूँ ? और सीधा हाथ उसी पुर्ज़े पर जाता। यह रही नई कमानी ! ठीक है, ठीक काम कर रही है।

*[घड़ी पर फिर झुक जाता है। बाहर पौ फट रही है। रोशनी घड़ी के हिस्सों पर भी पड़ने लगी है। फिर हानूश उठकर पेंडुलम के पास जाकर कोई पुर्ज़ा हिलाता है, जिससे सारी घड़ी हरकत में आने लगी है। टिक्-टिक् तेज़ हो जाती है। हानूश कपड़े से हाथ पोंछता है। सन्तोष का भाव उसके चहेरे पर आ गया है।*

*कात्या और यान्का भागती हुई अन्दर आती हैं।]*

**हानूश** : कौन, कात्या ?

**कात्या** : हानूश ! मुझे अभी पता चला तो मैं और यान्का भागती हुई आई हैं।

**हानूश** : तुम आ गई कात्या ! यान्का बिटिया !

*[घड़ी की टिक्-टिक् साफ़ सुनाई देती है। कमरे में रोशनी बढ़ रही है। वृत्त के पार पुलिस अधिकारी खड़ा है। पुलिस के दो अधिकारी सीढ़ियों के पास खड़े हैं। दाईं दीवार के साथ पाँच-छह सिपाही खड़े हैं।]*

कोई आया है, कौन हो सकता है ? अन्धे आदमी को वक़्त का अन्दाज़ भी नहीं रहता।

लोगों को वक़्त बताता है और ख़ुद इतना भी नहीं जानता कि दिन है या रात !

*[सीढ़ियों पर कदमों की आहट]*

कोई आया है। कौन हो भाई ? लीवर टूटा पड़ा था और छोटे चक्कर के दो दाँते टूट गए थे, अब घड़ी ठीक चल रही है। मशीन है न आख़िर !

*[घड़ी बराबर टिक्-टिक् कर रही है।]*

**अधिकारी** : *(आगे बढ़कर)* जेकब का कहीं पता नहीं चल रहा है। कहाँ है जेकब ? तुम्हें ज़रूर मालूम होगा।

**हानूश** : कौन है ? क्या कह रहे हो, भाई ? किससे कहते हो ?

**अधिकारी** : हानूश कुफ़्लसाज़ ! तुम्हें ज़रूर मालूम होगा कि जेकब कहाँ पर है। उस शाम जब घड़ी बन्द हुई थी, जेकब यहूदियों की सराय में देखा गया था। कहाँ है वह ? तुम्हें सब मालूम है।

**हानूश** : मुझे कुछ भी नहीं मालूम कि वह कहाँ पर है। मगर मुझे अब उसकी ज़रूरत नहीं रह गई है। घड़ी चलने लगी है। वह होता तो सचमुच मुझे बहुत मदद मिलती, मगर कोई मज़ायका नहीं, घड़ी को मैं जैसे-तैसे ठीक कर लूँगा।...

**अधिकारी** : हानूश कुफ़्लसाज़, तुम्हारी साज़िश पकड़ी गई है। तुम यहाँ से भाग जाने की साज़िश कर रहे थे। इस रियासत को छोड़कर दूसरी किसी रियासत में घड़ी बनाने जा रहे थे, सरकार की मनाही के बावजूद। बादशाह सलामत के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर रहे थे। बादशाह सलामत ने तुम्हें तलब किया है।

**हानूश** : *(ठिठक जाता है, फिर बड़ी आश्वस्त आवाज़ में)* महाराज का हुक्म सिर-आँखों पर। मैं हाज़िर हूँ।...घड़ी बन सकती है, घड़ी बन्द भी हो सकती है। घड़ी बनानेवाला अन्धा भी हो सकता है, मर भी सकता है, लेकिन यह बहुत बड़ी बात नहीं है। जेकब चला गया ताकि घड़ी का भेद ज़िन्दा रह सके, और यही सबसे बड़ी बात है।

**अधिकारी** : तुम्हें अपनी सफ़ाई देनी हो तो बादशाह सलामत के सामने देना।

**हानूश** : मैं अपनी सफ़ाई नहीं दे रहा हूँ। मुझे अपनी सफ़ाई में कुछ भी नहीं कहना है। *(आश्वस्त भाव से)* इस लम्बे सफ़र का एक और पड़ाव ख़त्म हुआ, कात्या। न जाने अभी कितने पड़ाव बाक़ी हैं। पर तुम चिन्ता नहीं करो कात्या। घड़ी चलने लगी है।

मुझे कोई अफ़सोस नहीं, किसी बात की भी चिन्ता नहीं। अब मुझे विश्वास है, घड़ी बन्द नहीं होगी । कभी भी बन्द नहीं होगी। *(अधिकारी से)* मैं तैयार हूँ। जहाँ मन आए, ले चलो।

*[सिपाही हानूश को पकड़कर सीढ़ियों की ओर ले चलते हैं। घड़ी बजने लगती है। हानूश रुक जाता है, मुड़कर घड़ी की टन-टन सुनता है। उसकी आँखों में आँसू चमकता है, वह मुस्कुरा देता है और घड़ी की टिक्-टिक् के बीच मुड़कर सीढ़ियों की ओर चल देता है।]*

**[पर्दा गिरता है।]**

## शब्दार्थ-टिप्पण

**तलब** बुलावा, इच्छा **मुनादी** ढिंढोरा **मीनार** गोलाकार ऊँची इमारत **शुक्रिया** धन्यवाद **नौसिखुआ** नया-नया सीखा हुआ **यकीन** विश्वास **मद्धिम** धीमा **दहशत** भय **मज़ायका** अड़चन, आपत्ति **खिलाफ़वर्जी** विरोध करना **ऐन** - ठीक, एकदम **कारिंदा** कर्मचारी **तबदीली** परिवर्तन **मशविरा** राय, बातचीत **लुक्मा** ग्रास, कौर **कयास** अनुमान **मुनादी** घोषणा

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :**

(1) सरकार ने हानूश को तलब होने के लिए क्यों कहा है ?

(2) घड़ी का लीवर किस कारण जल्दी टूट गया था ?

(3) हानूश के साथ क्या जुल्म हुआ ?

(4) घड़ी के पुर्जों को जंग कैसे लग गया ?

(5) 'तुम कुछ खा लो' कौन, किससे कहता है ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :**

(1) घड़ी टूट जाने के बारे में हानूश को क्या शक हुआ ?

(2) रियासत-भर में दहशत क्यों फैल गई ?

(3) कात्या और यान्का भागती हुई अंदर क्यों आती हैं ?

(4) अधिकारी ने शहर में किस बात की मुनादी कराने के लिए कहा ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के आठ-दस वाक्यों मे उत्तर लिखिए :**

(1) हानूश का दिल क्यों भर आया ?

(2) हानूश के मन में घड़ी को तोड़ डालने का विचार क्यों आया ?

(3) कलाकार के मन के द्वन्द्व को अपने शब्दों में लिखिए।

**4. आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) अंधे आदमी को वक्त का अंदाज भी नहीं रहता।

(2) तुम घड़ी के साथ कैसे रूठ सकते हो हानूश, तुम्हीं ने तो उसे बनाया है। बनानेवाला भी कभी अपनी चीज को तोड़ता है !

**5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :**

यकीन, मद्धिम, दहशत, दुबला।

**6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :**

आशीर्वाद, अस्थिर, साधारण, नियमित।

**7. निम्नलिखित शब्द-समूहों के लिए एक-एक शब्द दीजिए :**

(1) नया-नया सीखा हुआ -

(2) ताला बनाने वाला -

(3) घड़ी बनाने वाला, उसे ठीक करने वाला -

(4) जिसे आँखों से न दिखता हो -

**8. निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :**

प्रत्येक, सदैव, नरेश, संतोष।

**9. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह करके समास-भेद लिखिए :**

दुबला-पतला, दाएँ-बाएँ, कल-पुर्जे, क्षीणकाय, सद्‌बुद्धि।

**10. निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य-प्रयोग कीजिए :**

दिल भर जाना, बिजली छू जाना।

**11. विभाग 'अ' के नाम के साथ विभाग 'ब' में दिए कथन के उचित जोड़े मिलाइए :**

| 'अ' | | 'ब' |
|---|---|---|
| (1) अधिकारी - 1 | - | आप ही मेरी मदद कीजिए। |
| (2) अधिकारी - 2 | - | यह कुछ रखा है, कोई घड़ी का हिस्सा है क्या ? |
| (3) हानूश | - | इसकी मरम्मत तो तुम्हें करनी ही है। |
| (4) आदमी | - | जेकब का कहीं पता नहीं चल रहा। |
| (5) कात्या | - | सभी दस्तकार लोग घड़ी से दूर रहना चाहते हैं। |
| (6) बूढ़ा लुहार | - | तुम फिर पहले की तरह बातें करने लगे हो। |

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- घड़ीसाज की मुलाकात लें।
- 'कलाकार का स्वाभिमान' विषय पर चर्चा करें।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- एक कलाकार का समाज-सेवी रूप स्पष्ट करें।

●

# 21 किस्सा जनतंत्र

**सुदामा पांडेय 'धूमिल'**

(जन्म : सन् 1936 ई.; निधन : 1975 ई.)

साठोत्तरी कविता के सशक्त हस्ताक्षर सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' का जन्म उत्तर प्रदेश में वाराणसी जिले के निकट खेवली गाँव में हुआ था। गीतों से अपनी काव्य-यात्रा शुरू करनेवाले 'धूमिल' शीघ्र ही अकविता से जुड़ गये । इन्होंने बड़ी निर्ममता और निर्भयता से भारतीय जनतंत्र की असलियत को उजागर किया। अपने आक्रोश और व्यंग्य की अभिव्यक्ति के लिए इन्होंने धुँआधार अनगढ़ भाषाशैली का प्रयोग कर काव्यभाषा को एक नया मुहावरा दिया। ब्रेन ट्यूमर के कारण कम उम्र में ही इनका अकाल निधन हो गया।

'संसद से सड़क तक', 'कल सुनना मुझे' और 'सुदामा पाण्डेय का प्रजातंत्र' धूमिल की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं । 'कल सुनना मुझे' के लिए इन्हें साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया।

प्रस्तुत कविता में धूमिल की सरल, सहज लेकिन आक्रोशपूर्ण चोटदार भाषाशैली और सटीक प्रस्तुतीकरण के दर्शन होते हैं। इस कविता में कवि ने जनतंत्र में भी मँहगाई और भुखमरी से जूझ रहे परिवार का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। परिवार के लोगों के अभाव से भरे जीवन के दु:ख को रसोई के साधनों करछुल, बटलोही, चिमटा, चूल्हा, पोटली, कठवत आदि के माध्यम से संकेतित किया गया है जिससे कविता प्रभावशाली बन गयी है। इसमें इस ओर भी संकेत किया गया है कि अभाव न सिर्फ़ कोमल भावनाओं को ही ख़त्म कर देते हैं, बल्कि जीवन को मशीन की तरह बेजान भी बना देते हैं।

---

करछुल-
बटलोही से बतियाती है और चिमटा
तवे से मचलता है
चूल्हा कुछ नहीं बोलता
चुपचाप जलता है और जलता रहता है

औरत-
गवें-गवें उठती है-गगरी में
हाथ डालती है
फिर एक पोटली खोलती है।
उसे कठवत में झाड़ती है
लेकिन कठवत का पेट भरता ही नहीं
पतरमुही (पैंथन तक नहीं छोड़ती)
सर्र फरर बोलती है और बोलती रहती है

बच्चे आँगन में -
आँगड़-बाँगड़ खेलते हैं
घोड़ा-हाथी खेलते हैं

चोर-साव खेलते हैं
राजा-रानी खेलते हैं और खेलते रहते हैं
चौके में खोई हुयी औरत के हाथ
कुछ भी नहीं देखते
वे केवल रोटी बेलते हैं और बेलते रहते हैं
एक छोटा-सा जोड़-भाग
गश खाती हुयी आग के साथ-साथ
चलता है और चलता रहता है

बड़कू को एक
छोटकू को आधा
पारबती-बालकिशुन आधे में आधा
कुल रोटी छै,
और तभी मुँह दुब्बर
दरबे में आता है - 'खाना तैयार है ?'
उसके आगे थाली आती है
कुल रोटी तीन
खाने से पहले मुँह दुब्बर
पेटभर
पानी पीता है और लजाता है
कुल रोटी तीन
पहले उसे थाली खाती है
फिर वह रोटी खाता है

और अब-
पौने दस बजे हैं-
कमरे की हर चीज
एक रटी हुई रोजमर्रा धुन
दुहराने लगती है
वक्त घड़ी से निकलकर
अंगुली पर आ जाता है और जूता
पैरों में, एक दंत टूटी कंघी
बालों में गाने लगती है

दो आँखें दरवाजा खोलती हैं
दो बच्चे टाटा कहते हैं
एक फटेहाल कलफ कालर –
टाँगों में अकड़ भरता है
और खटर पटर एक ढढ्ढा साइकिल
लगभग भागते हुए चेहरे के साथ
दफ्तर जाने लगती है
सहसा चौरस्ते पर जली लाल बत्ती जब
एक दर्द हौले से हिरदै को हूल गया
'ऐसी क्या हड़बड़ी कि जल्दी में पत्नी को
चूमना–
देखो, फिर भूल गया !'

## शब्दार्थ-टिप्पण

**बटलोही** बटुई, बटलोई **गवें-गवें** धीरे–धीरे **कठवत** लकड़ी का बना पात्र जिसमें आँटा गूँथते हैं **पतरमुंही** जिसके बोलने पर लगाम न हो **पैथन** 'परथन' यानी रोटी बनाने के लिए लोई पर जो सूखा आँटा लगाकर बेलते हैं **हड़बड़ी** जल्दी **दरबा** दड़बा, छोटी बंद कोठरी जिसमें खिड़की नहीं होती **दुब्बर** कमजोर, दूबर, दुर्बल **मुह दुब्बर** विरोध में बोल न सकने वाला **कलफ** मांड़ी (पतली लेई जिसे कपडों पर उनकी तह कड़ी और बराबर करने के लिए लगाते हैं ।

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :**
(1) चिमटा और तवा किस कार्य के साधन हैं ?
(2) आँटा कहाँ रखा गया है ?
(3) 'कठवत का पेट भरता ही नहीं' का क्या तात्पर्य है ?
(4) 'किस्सा जनतंत्र' काव्य के रचयिता कौन हैं ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :**
(1) बच्चे आँगन में कौन–कौन से खेल खेल रहे हैं ?
(2) रोटी बनाते समय औरत क्या सोच रही है ?
(3) चौराहे पर लालबत्ती हो जाने पर कथानायक को क्या याद आता है ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के पाँच-सात वाक्यों में उत्तर लिखिए :**
(1) 'एक रटी हुई रोजमर्रा धुन' से क्या तात्पर्य है ?
(2) कथानायक के दफ्तर जाते समय के क्रियाकलापों का वर्णन कीजिए।

**4. आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) चूल्हा कुछ नहीं बोलता
चुपचाप जलता है
और जलता रहता है।

(2) पहले उसे थाली खाती है
फिर वह रोटी खाता है

(3) वक्त घड़ी से निकलकर
अंगुली पर आ जाता है।

**5. नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :**

(1) करछुल बटलोही से ........................ है।

(A) चलता (B) बतियाती (C) मचलता (D) जलता

(2) चिमटा तवे से ........................ है।

(A) चलता (B) बतियाती (C) मचलता (D) जलता

(3) चूल्हा कुछ नहीं बोलता चुपचाप ......................... है।

(A) चलता (B) बतियाती (C) मचलता (D) जलता

(4) एक छोटा-सा जोड़-भाग गश खाती हुई आग के साथ-साथ .......................... है।

(A) चलता (B) टलता (C) मचलता (D) जलता

**6. पर्यायवाची शब्द लिखिए :**

पत्नी, बालक, पैर, औरत।

**7. विलोम शब्द लिखिए :**

वक्त, दर्द, छोटा, गुणा, अब।

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- गणतंत्र दिवस समारोह का प्रतिवेदन तैयार कीजिए।
- 'भारतीय जनतंत्र' विषय पर वक्तव्य तैयार करके उसे वर्गखंड में प्रस्तुत कीजिए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- विद्यार्थी-समूह के समक्ष प्राचीन भारतीय गणराज्य विषय पर व्याख्यान का आयोजन करवाएँ।

●

**22**

# द

**प्रतापनारायण मिश्र**

(जन्म : सन् 1856 ई.; निधन : 1894 ई.)

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले में हुआ था। इन्हें आधुनिक हिंदी के निर्माताओं में से एक माना जाता है। कवि, लेखक और पत्रकार के रूप में प्रसिद्धि पायी। भारतेंदु हरिश्चंद्र से इतने प्रभावित हुए कि 'प्रतिभारतेंदु' या 'द्वितीयचंद्र'आदि कहे जाने लगे थे। कई मित्रों के सहयोग से 'ब्राह्मण' नाम का मासिक पत्र निकाला। इनका कई भाषाओं पर अधिकार था। इनके निबंधों में विषयों की पर्याप्त विविधता थी।

वे धार्मिक, सामाजिक, साहित्यिक आदि सभी विषयों पर निबंध लिखा करते थे, यहाँ तक कि उन्होंने अक्षरों पर भी बहुत ही रोचक निबंध लिखे हैं। उनमें से 'द' नाम का एक व्यंग्यात्मक निबंध यहाँ संकलित किया गया है। इस 'द' की विशेषता बताते हुए प्रतापनारायण मिश्र बताते हैं, '.... हिंदी, फ़ारसी दोनों में इस अक्षर का आकार हँसिया का-सा होता है, और बालक भी जानता है कि उससे सिवा काटने-चीरने के और काम नहीं निकलता।' 'अंग्रेज बहादुरों' की शोषण-वृत्ति पर व्यंग्य करने के लिए उन्होंने अंग्रेज़ी में 'द' के न होने का ये कारण बताया था, ''वहाँ के चतुर लोगों ने बड़ी दूरदर्शिता करके इस अक्षर के ठौर पर 'डकार' अर्थात् 'डी' रक्खी है, जिसका अर्थ ही डकार जाना, अर्थात् यावत् संसार की लक्ष्मी, जैसे बने वैसे, हज़म कर लेना !''

---

हमारी और फारस वालों की वर्णमाला भर में इससे अधिक अप्रिय, कर्णकटु और अस्निग्ध अक्षर, हम तो जानते हैं, और न होगा। हमारे नीति विदांबर अंग्रेज बहादुरों ने अपनी वर्णमाला में बहुत अच्छा किया जो नहीं रक्खा ! नहीं उस देश के लोग भी देना सीख जाते तो हमारी तरह निष्कंचन हो बैठते। वहाँ के चतुर लोगों ने बड़ी दूरदर्शिता करके इस अक्षर के ठौर पर 'डकार' अर्थात् 'डी' रक्खी है, जिसका अर्थ ही डकार जाना, अर्थात् यावत् संसार की लक्ष्मी, जैसे बनै वैसे, हजम कर लेना।

जिस भारत लक्ष्मी को मुसलमान सात सौ वर्ष में अनेक उत्पात करके भी न ले सके उसे उन्होंने सौ वर्ष में धीरे-धीरे ऐसे मजे के साथ उड़ा लिया कि हँसते-खेलते विलायत जा पहुँची ! इधर हमारे यहाँ दकार का प्रचार देखिए तो नाम के लिये देओ, यश के लिये देओ, देवताओं के निमित्त देओ, पितरों के निमित्त देओ, राजा के हेतु देओ, कन्या के हेतु देओ, मजे के वास्ते देओ, अदालत के खातिर देओ, कहाँ तक कहिए, हमारे बनबासी ऋषियों ने दया और दान को धर्म का अंग ही लिख मारा है। सब बातों में देव, और उसके बदले में लेव क्या ?

झूठी नामवरी, कोरी वाह वाह, मरणांतर स्वर्ग, पुरोहित जी का आशीर्वाद, रूजगार करने की आज्ञा वा खिताब, क्षणिक सुख इत्यादि। भला देश क्यों न दरिद्री हो जाय ? जहाँ देना तो सात समुद्र पार वालों तथा सात स्वर्ग वालों तक को तन, मन, धन, और लेना मनमोदक मात्र ! बलिहारी इस दकार के अक्षर की ! जितने शब्द इसमें पाइएगा, सभी या तो प्रत्यक्ष ही विषवत, या परंपरा द्वारा कुछ न कुछ नाश कर देने वाले। दुष्ट, दुःख, दुर्दशा, दास्य, दौर्बल्य, दंड, दंभ, दर्प, द्वेष, दानव, दर्द, दाग, दगा, देव (फारसी में राक्षस), दोजख, दम का आरज, दरिंदा (हिंसक जीव), दुश्मन, दा (शूली), दिक्कत इत्यादि सैकड़ों शब्द आपको ऐसे मिलेंगे जिनका स्मरण करते ही रोंगटे खड़े होते हैं। क्यों नहीं, हिंदी, फारसी दोनों में इस अक्षर का आकार हँसिया का सा होता है, और बालक भी जानता है कि उससे सिवा काटने चीरने के और काम नहीं निकलता। सर्वदा बंधन रहित होने पर भी भगवान् का नाम दामोदर क्यों पड़ा, कि आप भी रस्सी से बँधे और समस्त वृजभक्तों को दइया 2 करनी पड़ी ?

स्वर्ग बिहारी देवताओं सब सामर्थ्य होने पर भी पुराणों के अनुसार सदा दनुज कुल से क्यों भागना पड़ा ? आज भी नए मत वालों के मारे अस्तित्व तक में संदेह है ! ईसाइयों की नित्य गाली खाते हैं। इसका क्या कारण है ? पंचपांडव समान वीर शिरोमणि तथा भगवान् कृष्णचंद्र सरीखे रक्षक होते हुए द्रुपदतनया को केशाकर्षण एवं वनवास आदि का दु:ख सहना पड़ा। इसका क्या हेतु ? देशहितैषिता ऐसे उत्तम गुण का भारतवासी मात्र नाम तक नहीं लेते ? यदि थोड़े से लोग उसके चाहने वाले हैं भी तो निर्बल, निर्धन, बदनाम ! यह क्यों ? दंपति अर्थात् स्त्री-पुरुष, वेद, शास्त्र, पुराण, बायबिल, कुरान सब में लिखा है कि एक हैं, परस्पर सुखकारक हैं। पर हम रिषिवशीय कान्यकुब्ज़ों में एक दूसरे के बैरी होते हैं। ऐसा क्यों है ?

दूध, दही, कैसे उत्तम, स्वादिष्ट बलकारक पदार्थ है कि अमृत कहने योग्य, पर वर्तमान राजा उसकी जड़ ही काटे डालते हैं, हम प्रजागण कुछ उपाय ही नहीं करते, इसका क्या हेतु है ? इन सब बातों का यही कारण है कि इन सब नामों के आदि में यह दुरूह 'दकार' है। हमारे श्रेष्ठ सहयोगी 'हिंदी-प्रदीप' सिद्ध कर चुके हैं कि 'लकार' बड़ी ललित और रसीली होती है। हमारी समझ में उसी का साथ पाने से दीनदयाल, दिलासा, दिलदार, दालभात इत्यादि दस-पाँच शब्द कुछ पसंदी हो गए हैं, नहीं तो देवताओं में दुर्गा जी, रिषियों में दुर्बासा, राजाओं में दुर्योधन महान होने पर भी कैसे भयानक हैं। यह दद्दा ही का प्रभाव है।

कनवजियों के हक में दमाद और दहेज, खरीदारों के हक में दुकानदार और दलाल, चिड़ियों के हक में दाम (जाल) दाना आदिक कैसे दुखदायी हैं। दमड़ी कैसी तुच्छ संज्ञा है। दाद कैसा बुरा रोग है, दरिद्र कैसी कुदशा है, दारू कैसी कड़वाहट, बदबू, बदनामी, और बदफैली की जननी है, दोगला कैसी खराब गाली है, दंगा बखेड़ा कैसी बुरी आदत है, दंश (मच्छड़ या डास) कैसे हैरान करने वाले जंतु हैं, दमामा कैसा कान फोड़ने वाला बाजा है, देशी लोग कैसे घृणित हो रहे हैं, दलीप सिंह कैसे दीवानापन में फँस रहे हैं। कहाँ तक गिनावें, दुनिया भर की दंतकटाकट 'दकार' में भरी है। इससे हम अपने प्रिय पाठकों का दिमाग चाटना नहीं पसंद करते, और इस दुस्सह अक्षर की दास्तान को दूर करते हैं।

### शब्दार्थ-टिप्पण

**निष्कंचन** दरिद्र, गरीब **देव** देना **देओ** दो **दनुज** राक्षस **ललित** सुंदर **बखेड़ा** झगड़ा **अस्निग्ध** रुक्ष **द्रुपदतनया** द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी **बैरी** शत्रु, दुश्मन **निर्बल** कमजोर **निर्धन** गरीब **संदेह** शंका **दिलासा** भरोसा, आश्वासन **संज्ञा** नाम

### स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**

(1) लेखक के मतानुसार वर्णमाला का सबसे अप्रिय वर्ण कौन-सा है ?

(2) ऋषियों ने धर्म का अंग किसे कहा है ?

(3) द्रौपदी को कौन-कौन से दुख सहने पड़े ?

(4) स्वादिष्ट और शक्तिदायक पदार्थ कौन-कौन से हैं ?

(5) दारू में कौन-कौन से दुर्गुण हैं ?

(6) हँसिये का क्या उपयोग किया जाता है ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :**

(1) अंग्रेजों ने अपनी वर्णमाला में किस वर्ण को नहीं रखा है ? क्यों ?

(2) किन शब्दों के स्मरण मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते हैं ?

(3) दामोदर शब्द का उपयोग किसके लिए किया गया है ? उसमें क्या विरोधाभास है ?

(4) अंग्रेजों ने दकार के बदले अपनी वर्णमाला में कौन सा वर्ण रखा है ? क्यों ?

(5) लेखक ने 'दकार' के कौन-कौन से दृष्टांत देकर उसे दुस्सह बताया है ?

**3. संक्षेप में उत्तर लिखिए :**

(1) हमारे देश में दकार का प्रचार किस प्रकार हुआ है ?

(2) लकार की विशेषता लिखिए।

**4. आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) ''दुनिया भर की दंतकटाकट दकार से भरी है।''

**5. मुहावरों का अर्थ लिखिकर वाक्यप्रयोग कीजिए :**

(1) डकार जाना, (2) रोंगटे खड़े हो जाना, (3) दिमाग चाटना।

**6. विलोम शब्द लिखिए :**

प्रत्यक्ष, बंधन, निर्धन, बदनाम, स्वर्ग, रक्षक, गुण, देव, स्मरण।

**7. सविग्रह समास बताइए :**

वनवास, दीनदयाल, दालभात, द्रुपदतनया।

**8. संधि-विग्रह कीजिए :**

निर्बल, दुस्सह, निर्धन, दुष्ट, दुर्दशा।

**9. भाववाचक संज्ञा लिखिए :**

दरिद्र, पुरुष।

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- विद्यार्थी पाठ में आए सभी दकार एवं लकार शब्दों की सूची बनाएँ।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- विद्यार्थियों को हिन्दी एवं अंग्रेजी वर्णमाला में अंतर की जानकारी दें।

●

# 23 चक्रवात

**ओमप्रकाश वाल्मीकि**

(जन्म : सन् 1950 ई.; निधन : 2013 ई.)

दलित साहित्य के इस मूर्धन्य साहित्यकार का जन्म उत्तर प्रदेश में जिला मुजफ्फरनगर के ग्राम बरला में हुआ था । इनका बचपन सामाजिक एवं आर्थिक कठिनाइयों में बीता। इन्होंने एम.ए. तक शिक्षा प्राप्त की। अध्ययन के दौरान इन्हें अनेक आर्थिक, सामाजिक और मानसिक कष्ट व उत्पीड़न झेलने पड़े। वाल्मीकि जी कुछ समय तक महाराष्ट्र में रहे जिससे वहाँ के दलित लेखकों के संपर्क में आए और उनकी प्रेरणा से डॉ. भीमराव आंबेडकर की रचनाओं का अध्ययन किया इससे इनकी रचना-दृष्टि में बुनियादी परिवर्तन आया।

इन्होंने देहरादून में आर्डिनेंस फैक्टरी में अधिकारी के पद पर अपनी सेवाएँ दीं। हिन्दी में दलित साहित्य के विकास में ओमप्रकाश वाल्मीकि की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इन्होंने अपने लेखन में जातीय अपमान और उत्पीड़न का जीवंत वर्णन किया है और भारतीय समाज के कई अनछुए पहलुओं को पाठक के समक्ष उजागर किया है। इन्होंने सर्जनात्मक साहित्य के साथ-साथ आलोचनात्मक लेखन भी किया है। इनकी भाषा सहज, आवेगमयी है जिसमें व्यंग्य का गहरा पुट भी दिखता है। अपनी आत्मकथा 'जूठन' के कारण इन्हें हिन्दी साहित्य में विशेष पहचान और प्रतिष्ठा मिली। 1993 में डॉ. आंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार और 1995 में परिवेश सम्मान तथा साहित्य भूषण पुरस्कार से इन्हें अलंकृत किया गया। 'सदियों का सन्ताप', 'बस बहुत हो चुका' इनके प्रसिद्ध काव्य-संग्रह और 'सलाम' कहानी-संग्रह है।

प्रस्तुत कविता में ओमप्रकाश वाल्मीकि की यथार्थवादी एवं आवेगमयी भाषा के दर्शन होते हैं। दलितों पर हुए अन्याय और अत्याचार को याद कराते हुए वे आज की नई पीढ़ी के लोगों को सावधान कर रहे हैं। अपने आत्मसम्मान को जगाने के लिए आह्वान कर रहे हैं। तभी हम स्वयं को पुन: अन्याय और अत्याचार से बचा पाएँगे।

---

जहाँ खड़े हो
वहीं खड़े रहो
सीधे तन कर
या जिस काम में लगे हो
उसे पूरा कर लेने के बाद
बचा कर रखो
कुछ पल
तन कर सीधा खड़े रहने के लिए

खींचो एक लम्बी साँस
और फिर छोड़ो उतनी ही
करो महसूस
वर्तमान की तमाम तल्खियों को
और अतीत के उन दिनों को
जो बाप-दादों के अनुभवों में
आज भी ज़िन्दा हैं

सिसकियाँ और घुटन बन कर
जिन्हें महसूस करने से भी
तुम कतराते हो

एक बेचैनी है
तुम्हारी साँसों में
जिसे चाह कर भी
तुम छिपा नहीं पाते हो

तुम्हारे पीछे दौड़ रहा है
अतीत का भयानक चक्रवात
जो कभी भी मिटा देगा
वर्तमान के उजाले को
एक धर्मान्ध आक्रमणकारी की तरह

जिसके पास खतरनाक विस्फोटक हैं
साथ ही कुछ आकर्षक शब्द भी
जो और भी ज्यादा मारक हैं
तुम घिर चुके हो
पूरी तरह
इस चक्रवात में

क्रूर हमलावर ताक में है
तुम्हें पालतू बनाकर
दरवाज़े पर बाँधने के लिए

इसीलिए,
सीधे तन कर खड़े हो जाओ
और चीखो एक लम्बी साँस
पहचानो विषैली गन्ध को-
जिसने कभी जीने नहीं दिया
तुम्हारे पुरखों को
एक इंसान की तरह
जो तुम्हें फिर से
खींच रही है
अपनी ओर
बर्बरता के साथ !

## शब्दार्थ-टिप्पण

**पल** क्षण **तल्खी** कटुता **कतराना** बचना **घुटन** घबराहट **बेचैनी** अकुलाहट **चक्रवात** बवंडर **धर्मांध** स्वधर्म में अंधश्रद्धा रखने वाला **विस्फोटक** विस्फोट करने वाला **आकर्षक** लुभावना **मारक** मारनेवाला **विषैली** जहरीली **पुरखे** पूर्वज **बर्बरता** असभ्यता, जंगलीपन।

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**

(1) 'तुम' संबोधन किस वर्ग के लिए है ?

(2) कवि सीधे तनकर खड़े रहने के लिए क्यों कहते हैं ?

(3) कवि दलितों को क्या बचाकर रखने के लिए कहते हैं ?

(4) दलित किसे महसूस करने से कतरा रहा है ?

(5) अतीत की तमाम तल्खियाँ आज भी कहाँ जिंदा हैं ?

(6) क्रूर हमलावर क्या करना चाहते हैं ?

(7) दलित की बेचैनी क्यों नहीं छिप रही है ?

(8) कवि किसे पहचानने की बात कह रहे हैं ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :**

(1) ओमप्रकाश वाल्मीकि के अनुसार दलित कैसे पूरी तरह घिर चुका है ?

(2) दलित के पुरखों को किसने जीने नहीं दिया ?

(3) अतीत का भयानक चक्रवात किसे मिटा देगा ?

(4) बाप-दादों के अतीत का अनुभव किस रूप में व्यक्त हुआ है ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :**

(1) कविता का केन्द्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

(2) अतीत का भयानक चक्रवात किसके समान दौड़ रहा है ? उसका क्या परिणाम होगा ?

**4. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :**

(1) बचाकर रखो
कुछ पल
तनकर सीधा खड़े रहने के लिए।

(2) साथ ही कुछ आकर्षक शब्द भी
जो और भी ज्यादा मारक हैं।

(3) पहचानो विषैली गंध को
जिसने कभी जीने नहीं दिया।

**5. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए :**

पुरखे, अतीत, पल, तल्खी।

**6. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :**

बर्बरता, बेचैन, छिपाना, आकर्षक, वर्तमान।

**7. सही विकल्प चुनकर काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :**

(1) वहीं खड़े रहो सीधे ........................।

(A) सटकर (B) तनकर (C) बनकर (D) अड़कर

(2) खींचो एक लंबी साँस और फिर ........................ उतनी ही।

(A) छोड़ो (B) जोड़ो (C) तोड़ो (D) मोड़ो

(3) तुम ........................ चुके हो पूरी तरह।

(A) पिट (B) घिर (C) मर (D) गिर

(4) जो तुम्हें फिर से खींच रही है अपनी ओर ........................ के साथ।

(A) नश्वरता (B) जर्जरता (C) उर्वरता (D) बर्बरता

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- किन्हीं दो दलित कवियों की रचनाएँ प्राप्त करके पढ़िए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' का सार विद्यार्थियों को सुनाइए।
- 'आकर्षक' किंतु 'मारक' का संदर्भ स्पष्ट कीजिए।

●

# 24 जहाँ आकाश नहीं दिखाई देता

**विष्णु प्रभाकर**

(जन्म : सन् 1912 ई.; निधन : 2009 ई.)

इनका जन्म उत्तर प्रदेश के ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर में हुआ था। इनका आरंभिक नाम विष्णु दयाल था। इन्होंने गद्य की लगभग सभी विधाओं में उल्लेखनीय काम किया है। उनके द्वारा लिखी गयी बाँग्ला साहित्यकार शरच्चंद्र चट्टोपाध्याय की 'आवारा मसीहा' नाम की जीवनी उनकी पहचान का पर्याय कही जाती है। इनके उपन्यास 'अर्धनारीश्वर' पर इन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार दिया गया था। इन्हें पद्मभूषण सम्मान भी प्राप्त हुआ था।

जिस कोलकाता को पहले कलकत्ता कहा जाता था, उससे जुड़ा एक मार्मिक रिपोर्ताज़ है 'जहाँ आकाश नहीं दिखाई देता'। उसके बारे में विष्णु प्रभाकर बताते हैं कि 'असल में वह सब कुछ का मिश्रण है। निख़ालिस तो इस युग में विष भी नहीं है।' इस महानगर में अगर अकाल के दौर में भूख से तड़पकर लाखों लोगों ने प्राण दिये हैं, तो यहाँ अनेक आंदोलन भी पैदा हुए हैं। संगीत और संगीन दोनों में महारत रखनेवाले लोग यहाँ मिल जाते है। विष्णु प्रभाकर की पैनी दृष्टि सामाजिक विषमता को देखे बिना नहीं रहती, जिसमें एक तरफ़ वह जन्नत है, जिसमें 'राजसी ऐश्वर्य और विलासिता है', तो दूसरी तरफ़ वह जहन्नुम है, जिसमें लोगों को 'भूख है कि खाये जा रही है।'

---

मैं आकाश की ओर देखता हूँ। आश्चर्य, जो आज तक नहीं देख सका था वह इस क्षण दिखाई देता है। कलकत्ते के आकाश पर ऐसा कुछ छाया रहता है जिसे न कुहरा कह सकते हैं, न धुंध, न धुआँ और न शोर। असल में वह सब कुछ का मिश्रण है। निखालिस तो इस युग में विष भी नहीं है। सब मिश्रण, मिश्रण और मिश्रण।...

सहसा एक धक्का लगता है। एक रेला मेरे अकेलेपन को कुचलता हुआ चारों ओर फैल जाता है और फिर मेरे लिए पैर टिकाना कठिन हो जाता है। सचमुच यह कलकत्ता है जहाँ न आकाश दिखाई देता है और न धरती पर पैर पड़ते हैं। यह हावड़ा का विश्वविख्यात लौह पुल है और सन्ध्या घिर आई है। नीचे गंगा है शिथिल, बदरंग, किसी बिफरी धनी प्रौढ़ा-सी और ऊपर मानव की खरस्रोता भीड़ है, जो क्षुधा के विराट रूप की तरह सब कुछ को ग्रसने के लिए लपकी जा रही है और मैं तूफान में तिनके की तरह विवश, विभ्रांत उड़ा जा रहा हूँ।...

आदमी, आदमी और आदमी। सब अकेले जीविका की मृगतृष्णा के पीछे भागे जा रहे हैं जो, फैक्ट्रियों, दफ्तरों और दूकानों के बाबुओं और मज़दूरों से लेकर फुटपाथों, बाइलेनों के जेबकतरों और चोरबागान के साहूकारों से लेकर रामबागान की वेश्याओं तक के दलालों को परेशान किए हुए है। बसों पर बसें चली जा रही हैं। ट्रामें घड़घड़ाती; अग्निस्फुलिंग आकाश में उड़ाती निरन्तर दौड़ रही हैं। यहाँ सब कुछ दौड़ता है, बेतहाशा दौड़ता है। ताड़ाताड़ी आश्वी रे, ताड़ाताड़ी जा रे। मनुष्य की उतावली पदचाप, ट्राम की घड़घड़ाहट, बस के इंजन की फूत्कार, सबका यही अर्थ है - ताड़ाताड़ी, ताड़ाताड़ी, चरैवेति चरैवेति।...

यह कलकत्ता है। वही कलकत्ता जिसकी सड़कों पर भूख से तड़पकर लाखों व्यक्तियों ने प्राण दिये हैं, जिसके आकाश में कला और साहित्य के मानदण्ड स्थापित हुए हैं, जिसने प्रत्येक नये आन्दोलन को जन्म दिया है। यह आन्दोलनों का नगर है। युगों से प्रतिक्षण यहाँ एक न एक नया आन्दोलन उमड़ता आया है। समाज-सुधार का आन्दोलन,

कला और संगीत का आन्दोलन, साहित्य और स्वाधीनता का आन्दोलन। भूख और भाषा का आन्दोलन और आन्दोलन के लिए आन्दोलन । 'भैंगे दाओ', 'जेते ही होवे'[1], 'हिन्दी साम्राज्य ध्वंस होवे।...'

यहाँ के भावुक लोग संगीन और संगीत की विद्या में एकसमान दक्ष हैं। जितनी सहजता से सितार के तारों से मादक संगीत पैदा कर सकते हैं, उतनी ही कुशलता से 303 की गोली को भी किसी के वक्ष से पार कर सकते हैं ।...

दक्षिण कलकत्ता से ट्राम में बैठकर ठेठ उत्तर की ओर जा रहा हूँ। टन टनन टन घण्टी बजती है, स्टेशन आता है, गाड़ी रुकती है। सवारियाँ उतरती हैं और जोर-जोर से बोलती हैं और सड़क पर शाश्वत भीड़ उमड़ती है। सहसा पाता हूँ कि कहीं हलचल है। कुछ उत्तेजक शब्द गूँजते हैं। लाठियाँ उठती हैं। (जिन पर झण्डे लगे हैं उन्हीं डण्डों का वे लाठियों के रूप में प्रयोग करते हैं) एक दूसरे को लोग चीख-चीखकर कोसते हैं। लाठियाँ टकराती हैं। एक व्यक्ति तेजी से भागता हुआ आता है और दूसरे के पैर को किसी धारदार वस्तु से चीर देता है। दोनों गुत्थमगुत्था होने की कोशिश करते हैं। तभी न जाने किस शून्य में से पुलिस वाले प्रकट हो जाते हैं। लाठियाँ ही लाठियाँ पड़ी रह जाती हैं। पुलिस बटोरकर उन्हें एक ओर रख देती है। ट्राम शोर मचाती बराबर आगे बढ़ती है।...

फिर सहसा उस शोर में हलचल मचती है। फिर कुछ लोग एक-दूसरे पर आक्रमण करते हैं। एक व्यक्ति बड़े-से पत्थर से दूसरे व्यक्ति के अँगूठे को कुचल देता है। लगता है तूफान उमड़ उठेगा। लेकिन फिर वही खेल खेला जाता है। चुपचाप खड़े हुए पुलिस के जवान फिर लाठियाँ छीनने आ जाते हैं। 'भैंगे दाओ', 'भैंगे दाओ' के स्वर उठते हैं और मैं पाता हूँ कि उनमें से कुछ लोग मेरी ट्राम में चढ़ आये हैं। एक का पैर चिरा हुआ है, दूसरे का अँगूठा कुचला हुआ है। लेकिन वे उसकी चिंता नहीं करते। हँसते हैं, नारे लगाते हैं। सहसा उनमें से एक मेरी ओर देखता है। मेरे कपड़े खद्दर के हैं। सिर पर गाँधी टोपी है। वह पूछता है, ''तुम कांग्रेसी हो ?''

''जी नहीं।''

''प्रजा-समाजवादी ?''

''जी नहीं।''

''कम्युनिस्ट ?''

''जी नहीं।''

वह झुँझलाकर चीखता है, ''यह कैसे हो सकता है ? तुम कांग्रेसी या कम्युनिस्ट या प्रजा-समाजवादी या हिन्दूसभाई, तुम कुछ न कुछ हुए बिना कैसे रह सकते हो ?''

मैं बड़ी नम्रता से कहता हूँ, ''मैं लेखक हूँ, मैं इन्सान हूँ।''

वह कहता है, ''तो उससे क्या होता है ? तुमको कुछ होना ही होगा। तुम झूठ बोल रहे हो ?''

मैं घबराता हूँ। लेकिन तभी ट्राम रुक जाती है और वे लोग चीखते-तैरते, बाहर की भीड़ में समा जाते हैं। यह हंगामा, यह तर्क, मेरे मस्तिष्क में जैसे कलकत्ता का आकाश घुस आया है। मेरे सामने बैठे एक अधेड़ सज्जन मुस्करा रहे हैं। कहते हैं, ''डरो नहीं। आज विद्यार्थी बामपंथियों का साथ नहीं देंगे ?''

मैं सप्रश्न उनकी ओर देखता हूँ। वे उसी विश्वास से कहते हैं, ''चीन ने कम्युनिस्टों की रीढ़ तोड़ दी है। अब कलकत्ता में ट्राम और बसें नहीं जलेंगी।''

वे हँसते हैं। मैं उसी तरह उनकी ओर देखता रहता हूँ और ट्राम चलती रहती है। टन टनन टन। एस्प्लेनेड का मैदान जन समूह से भरा हुआ है। मेट्रो के आसपास गजब की भीड़ है और उन सबके बीच में मैं एक अजनबी हूँ। इस विशाल नगर के असंख्य अजनबियों के बीच में अपने को अत्यन्त असहाय पाता हूँ। लेकिन

यह असहाय अकेलापन, वक्ष में धुक्‌धुकी पैदा करके भी अच्छा लगता है। मैं उतरकर भीड़ में घुस जाता हूँ। और फिर एकाएक कन्धे पर किसी के हाथ का दबाव पाकर चौंक पड़ता हूँ। कहीं कोई रास्ता बताने वाला तो नहीं है। कलकत्ते के लोग रास्ता बताने के लिए इतने उत्सुक रहते हैं कि अक्सर गलत रास्ता बता देते हैं। परन्तु उसी क्षण मुड़कर पाता हूँ कि वह तो अजनबी नहीं है। बहुत पुराना मित्र है। मुस्कुराकर कहता है, ''तुम यहाँ कहाँ फँस गये ? आओ, आओ।''

और उस भीड़ में से खींचता हुआ मुझे ग्राण्ड होटल के भीतर ले जाता है, ''मैं यहाँ रिसेप्शनिस्ट हूँ। आओ, ऊपर बैठेंगे।''

जैसे अब तक जहन्नुम में था, अब जन्नत में आ पहुँचा हूँ। सब कुछ राजसी, ऐश्वर्य और विलासिता का प्रतीक । सब कुछ मूल्यवान, फर्नीचर, कालीन, लिफ्ट, बैरे और मोहक सुन्दरियाँ और इन सबको भोगने वाले देशी–विदेशी यात्री। मैं ऊपर चढ़ता चला जाता हूँ और सबसे ऊपर की मंजिल में एक सजे हुए कमरे की बालकनी से नीचे के जहन्नुम की ओर देखता हूँ। गति, गति और गति।...मनुष्य, मनुष्य और मनुष्य। बस के पहियों की कीलों पर भी कई–कई मनुष्य । झटका लगता है। कोई गिरता है और तैश में आकर मोटी–सी कोई गाली 'शाला', 'हरामजादा' बोलता हुआ भागा चला जाता है। केवल 'आना और जाना।' और इसी आने–जाने के बीच से प्रेम प्रदर्शन से लेकर जेबकतराई तक, नेताओं के भाषणों से लेकर छुरेबाजी तक सभी कुछ होता है। 'आमार शोनार बांगला देश।' सोने का देश है यह बंगाल। कलकत्ता में सोना ही सोना है। इसीलिए भूख है, ईंधन है, धुआँ है, आन्दोलन है। वहीं एक ओर जीवन के मानदण्ड पनपते हैं। कला शान्ति का स्वर घोष करता है। दूसरी ओर सड़कों पर लाशें कुचली जाती हैं, जीवित लाशें, सुन्दरियों की लाशें।....

फुटपाथ पर दौड़ते हुए, सहसा कोई परिचित टकरा जाता है। ''कमोन आछो।''

''भालोइ तो, आपनि...।'' ...मैं दौड़कर बस में चढ़ना चाहता हूँ। 'नमिते दिन' की चिन्ता नहीं करता। पर इस तूफानी प्रवाह में मेरे पैर नहीं टिक पाते। लड़खड़ता हूँ, टकराता हूँ और मेरे चारों ओर कोरस में आवाज़ें उठती हैं। 'देखछिस न केनो' 'घायल क्यों किए दे रहे हैं आप ?' मैं उनकी ओर देखता हूँ। उनकी आँखों में अग्नि है। मैं डर जाता हूँ; और बस छोड़कर फुटपाथों पर दौड़ने लगता हूँ। दस–दस मील तक मनुष्यों के सैलाब में से गुजर जाता हूँ। कैसे अजीबोगरीब हैं कलकत्ता के ये फुटपाथ ! न जाने किस अनन्त काल से असंख्य व्यक्ति इन फुटपाथों पर घर बनाकर रह रहे हैं। वहीं उकड़ूँ बैठकर खाना बनाते हैं, फिर टाँग पसारकर सो जाते हैं। व्यापार और विग्रह, प्रेम और प्रसव, सब यहीं होता है। उनमें वे रिफ्यूजी हैं जो पूर्वी बंगाल से परेशान होकर आए हैं, और वे भी हैं जो जन्म से मृत्यु तक शाश्वत रिफ्यूजी रहते हैं। गाँव से सोने की तलाश में आने वाले हट्टे–कट्टे बिहारी, नाटे, सांवले उड़िया, मूँछों पर ताव देते भैये। एक अद्‌भुत मिश्रण है यह बस्ती। मिश्रण नहीं, घोल है। अफीम का घोल। शरत् बाबू के इस नगर में अफीम बड़ी कारगर होती है।...

### शब्दार्थ-टिप्पण

**आश्चर्य** अचंभा, विस्मय **क्षण** पल, समय का एक छोटा सा भाग **निखालिस** शुद्ध, मिलावटरहित **कोशिश** प्रयत्न **अग्निस्फुलिंग** आग की चिनगारी **प्रतिक्षण** हर क्षण, हर पल **दक्ष** कुशल, प्रवीण **वक्ष** छाती **सवारी** यात्री, मुसाफिर **शाश्वत** स्थायी **धारदार** तेज, पैनी **रेला** भीड़ **अजनबी** अनजान, अपरिचित **जहन्नुम** नरक, नर्क **क्षुधा** भूख **जन्नत** स्वर्ग **तैश** गुस्सा, क्रोध **हलक** गला **रिफ्यूजी** शरणार्थी **हलचल** चहल–पहल

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**

(1) 'जहाँ आकाश दिखाई नहीं देता' पाठ में किस शहर का वर्णन किया गया है ?

(2) कोलकाता के पास से कौन-सी नदी बहती है ?

(3) कोलकाता के लोग कौन-कौन-सी विद्याओं में एकसमान दक्ष हैं ?

(4) लेखक के कन्धे पर किसने हाथ रखा ?

(5) मित्र लेखक को कहाँ ले गया ?

(6) लेखक होटल में क्या काम करता था ?

(7) कोलकाता में रिफ्यूजी कहाँ से आकर बस गए ?

(8) लेखक की वेशभूषा कैसी थी ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :**

(1) कोलकाता के लोगों में संगीत और संगीन का समन्वय हुआ है। कैसे ?

(2) पुलिसवालों का भीड़ पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(3) गाँव से सोने की तलाश में आने वाले लोग कैसे हैं ?

**3. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखिए :**

(1) कोलकाता को आन्दोलनों का नगर क्यों कहा जाता है ?

(2) होटल में पहुँचकर लेखक ने कैसा अनुभव किया ?

(3) कोलकाता की फुटपाथों पर रहने वाले लोग अपना जीवन किस प्रकार व्यतीत करते हैं ?

(4) दक्षिण कोलकाता से ट्राम में बैठने पर लेखक ने क्या देखा ?

**4. पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :**

(1) चरैवेति चरैवेति।

(2) निखालिस तो यहाँ विष भी नहीं है।

**5. सही विकल्प चुनकर खाली जगह पूर्ण कीजिए :**

(1) हावड़ा का विश्वविख्यात लौह-पुल ........................ नदी पर बना है।

(A) यमुना (B) गंगा (C) नर्मदा (D) तापी

(2) ...................... आन्दोलनों का नगर है।

(A) दिल्ली (B) मुंबई (C) कोलकाता (D) मद्रास

(3) लेखक ने ........................ के कपड़े पहने हैं।

(A) टेरीकाट (B) पोलिस्टर (C) खादी (D) पोपलीन

(4) .......................... को सोने का देश कहा गया है।

(A) बंगाल (B) बिहार (C) उड़ीसा (D) गुजरात

**6. संधि-विच्छेद लिखिए :**

सज्जन, विद्यार्थी।

**7. विरोधी शब्द लिखिए :**

सज्जन, संध्या, भीड़, जहन्नुम, परिचित, जन्म, स्त्री, मित्र, उत्साह।

**8. शब्दसमूह के लिए एक शब्द लिखिए :**

(1) जिसका कोई अन्त न हो -

(2) सद्कर्म करके मृत्यु के बाद व्यक्ति जहाँ जाता है -

**9. विशेषण बनाकर लिखिए :**

हँसना, दुख, नम्रता, वीरता।

**11. भाववाचक संज्ञा बनाकर लिखिए :**

मुस्कराना, विलास, झुंझलाना, सज्जन, विवश, घबराना।

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- विद्यार्थी भारत के मानचित्र में पश्चिम बंगाल तथा कोलकाता शहर का स्थान खोजिए।
- विद्यार्थी महानगरों के दैनिक जीवन में भागदौड़ के कारणों की चर्चा वर्गखंड में करें।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- शिक्षक कोलकाता के प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों के बारे में वर्गखण्ड में चर्चा करें।

●

# 25 उजले दिन जरूर

**वीरेन डंगवाल**

(जन्म : सन् 1947 ई.; निधन : 2015 ई.)

इनका जन्म उत्तराखण्ड के टेहरी गढ़वाल के कीर्तिनगर में हुआ। इन्होंने मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, कानपुर, बरेली, नैनीताल और अन्त में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. और तत्पश्चात डी.फिल. की डिग्रियाँ प्राप्त कीं। इन्होंने बरेली कॉलेज में हिन्दी अध्यापक के पद पर कार्य किया, साथ ही शौकिया तौर पर पत्रकारिता भी करते रहे। इन्होंने विश्व-कविता से पाब्लो नेरूदा, बर्टोल्ट ब्रेख्त, मीरोस्लाव होलुब, तदेऊश रोजेविच और नाजिम हिकमत की रचनाओं का अपनी विशिष्ट शैली में कुछ दुर्लभ अनुवाद भी किए हैं। 'इसी दुनिया में', 'दुष्चक्र में स्रष्टा', 'कवि ने कहा' तथा 'स्याही ताल' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इनकी कविताओं के बंगला, मराठी, पंजाबी, अंग्रेजी, मलयालम और उड़िया जैसी भाषाओं में अनुवाद भी हुए हैं। इन्हें रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार, श्रीकान्त वर्मा स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। सन् 2004 में आपको साहित्य अकादेमी पुरस्कार भी प्रदान किया गया।

प्रस्तुत कविता तमाम समस्याओं और परेशानियों के बीच रहकर भी इस अखंड विश्वास को खोने के लिए तैयार नहीं है कि 'आयेंगे, उजले दिन ज़रूर आयेंगे।' कवि यह तसल्ली झूठ-मूठ की नहीं देता, बल्कि उस ऐतिहासिक सत्य को उजागर करता है, जिसके अंतर्गत अपने संघर्ष से समाज बुरी-से-बुरी परिस्थिति को बदल देता है।

---

आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।
आतंक सरीखी बिछी हुई हर ओर बर्फ
है हवा कठिन हड्डी-हड्डी को ठिठुराती
आकाश उगलता अंधकार फिर एक बार
संशय-विदीर्ण आत्मा राम की अकुलाती
होगा वह समर, अभी होगा कुछ और बार
तब कहीं मेघ ये छिन्न-भिन्न हो पायेंगे।
आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।

तहखानों से निकले मोटे-मोटे चूहे
जो लाशों की बदबू फैलाते घूम रहे
हैं कुतर रहे पुरखों की सारी तस्वीरें
चीं-चीं-चिक्-चिक् की धूम मचाते घूम रहे
पर डरो नहीं, चूहे आखिर चूहे ही हैं
जीवन की महिमा नष्ट नहीं कर पायेंगे।
आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।

यह रक्तपात यह मार-काट जो मची हुई
लोगों के दिल भरमा देने का जरिया है
जो अड़ा हुआ है हमें डराता रस्ते में

लपटें लेता घनघोर आग का दरिया है
सूखे चेहरे बच्चों के, उनकी तरह हंसी
हम याद रखेंगे, पार उसे कर जायेंगे।
आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।

मैं नहीं तसल्ली झूठ-मूठ की देता हूँ
हर सपने के पीछे सच्चाई होती है
हर दौर, कभी तो खत्म हुआ ही करता है
हर कठिनाई, कुछ राह दिखा ही देती है
आये हैं जब हम चलकर इतने लाख वर्ष
इसके आगे भी तब चलकर ही जायेंगे।
आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।

### शब्दार्थ-टिप्पण

**उजले** साफ, स्वच्छ, अच्छे **आतंक** भय **संशय विदीर्ण** शंका से छिन्न भिन्न होना **अकुलाना** बेचैन होना **समर** युद्ध **मेघ** बादल **रक्तपात** मारकाट **दरिया** सागर **तसल्ली** आश्वासन।

### स्वाध्याय

**1. प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**

(1) कवि को कैसे दिन आने का विश्वास है ?
(2) चारों ओर बर्फ किसके समान बिछी हुई है ?
(3) लोगों को भरमाने का कौन-सा जरिया है ?
(4) हर सपने के पीछे क्या छिपा होता है ?
(5) जीवन में कठिनाई क्यों जरूरी है ?

**2. प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :**

(1) आतंकी चूहे क्या-क्या कर रहे हैं ?
(2) कवि को क्या अमर विश्वास है और क्यों ?
(3) 'समर होगा' ऐसा कवि ने क्यों कहा है ?
(4) जीवन की महिमा कौन नष्ट नहीं कर सकता ?

**3. प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में लिखिए :**

(1) लोगों के आतंकी जीवन का वर्णन लिखिए।
(2) काव्य का केन्द्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।
(3) अंत में कवि लोगों को क्या तसल्ली देते हैं, समझाइए।

**4. काव्य पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए :**

(1) ''यह रक्तपात यह मार-काट जो मची हुई
लोगों के दिल भरमा देने का जरिया है
जो अड़ा हुआ है हमें डराता रस्ते में
लपटें लेता घनघोर आग का दरिया है

(2) सूखे चेहरे बच्चों के, उनकी तरह हँसी
हम याद रखेंगे, पार उसे कर जायेंगे।
आयेंगे, उजले दिन जरूर आयेंगे।''

**5. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :**

बर्बरता, बेचैन, तल्खी, छिपाना, आकर्षक, वर्तमान।

**6. सही विकल्प चुनकर काव्यपंक्ति पूर्ण कीजिए :**

(1) तहखानों से निकले मोटे-मोटे ........................।

(A) आतंकी (B) कीड़े (C) चूहे (D) मानव

(2) हर सपने के पीछे ........................ होती है।

(A) अच्छाई (B) सच्चाई (C) कठिनाई (D) झुठाई

(3) हर कठिनाई कुछ ......................... दिखा ही देती है।

(A) चाह (B) माह (C) राह (D) दाह

**7. समानार्थी शब्द लिखिए :**

आतंक, समर, मेघ, राह, दरिया।

**8. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए :**

उजला, मोटे, बदबू, जीवन, कठिन।

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- विद्यार्थी वीरेन डंगवाल की अन्य कविताएँ ढूँढकर पढ़ें।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- ''आतंक जीवन की महिमा को नष्ट नहीं कर सकता'' विस्तारपूर्वक समझाइए।

●

# 26 तताँरा-वामीरो

**लीलाधर मंडलोई**

(जन्म : सन् 1953 ई.)

इनका जन्म मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा ज़िले में हुआ। समकालीन कवियों में ये काफ़ी महत्वपूर्ण गिने जाते हैं। इनके कई कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'घर-घर घूमा' कविता-संग्रह पर इन्हें मध्य प्रदेश साहित्य परिषद के रामविलास शर्मा सम्मान से पुरस्कृत किया गया। 'रात-बिरात' कविता-संग्रह पर मध्य प्रदेश साहित्य सम्मेलन के वागीश्वरी पुरस्कार तथा मध्य प्रदेश कला परिषद के रज़ा सम्मान से सम्मानित किया गया। इन्होंने चेखव की कथा पर फिल्म एवं कथाकार ज्ञानरंजन पर वृत्तचित्र का निर्देशन भी किया है। इनकी पुस्तक 'अंदमान-निकोबार की लोककथाएँ' भी बहुत चर्चित हैं ।

इसमें सुंदर और शक्तिशाली युवक तताँरा और मधुर गीत गानेवाली सुंदरी वामीरो की मौन और गहन प्रेम-कथा कही गयी है। तताँरा पासा गाँव का और वामीरो लपाती गाँव की रहनेवाली थी। वहाँ की प्रथा के अनुसार 'दोनों का संबंध संभव न था।' पासा गाँव के 'पशु-पर्व' पर वामीरो जब तताँरा को देखते ही फूट-फूटकर रोने लगी, तो उसकी माँ ने तताँरा को बहुत अपमानित किया। तताँरा ने मारे क्रोध के अपनी 'रहस्यमयी तलवार' ज़मीन में गाड़ दी, जिससे द्वीप दो भागों में बँट गया और उसकी ओर का हिस्सा समुद्र में धँसने लगा। समुद्र में वह कहाँ पहुँचा किसी को पता नहीं। वामीरो ने खाना-पीना छोड़ दिया और घर से अलग हो गयी। उनके इस दुखद प्रेम का सुखद परिणाम ये आया कि 'निकोबारी इस घटना के बाद दूसरे गाँवों में भी आपसी वैवाहिक संबंध करने लगे।'

---

अंदमान द्वीपसमूह का अंतिम दक्षिणी द्वीप है लिटिल अंदमान। यह पोर्ट ब्लेयर से लगभग सौ किलोमीटर दूर स्थित है। इसके बाद निकोबार द्वीपसमूह की शृंखला आरंभ होती है जो निकोबारी जनजाति की आदिम संस्कृति के केंद्र हैं । निकोबार द्वीपसमूह का पहला प्रमुख द्वीप है कार-निकोबार जो लिटिल अंदमान से 96 किमी दूर है। निकोबारियों का विश्वास है कि प्राचीन काल में ये दोनों द्वीप एक ही थे। इनके विभक्त होने की एक लोककथा है जो आज भी दोहराई जाती है।

सदियों पूर्व, जब लिटिल अंदमान और कार-निकोबार आपस में जुड़े हुए थे तब वहाँ एक सुंदर-सा गाँव था-पासा । पासा में एक सुंदर और शक्तिशाली युवक रहा करता था। उसका नाम था तताँरा। निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे । तताँरा एक नेक और मददगार व्यक्ति था। सदैव दूसरों की सहायता के लिए तत्पर रहता। अपने गाँववालों को ही नहीं, अपितु समूचे द्वीपवासियों की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझता था। उसके इस त्याग की वजह से वह चर्चित था। सभी उसका आदर करते। वक्त मुसीबत में उसे स्मरण करते और वह भागा-भागा वहाँ पहुँच जाता। दूसरे गाँवों में भी पर्व-त्योहारों के समय उसे विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता। उसका व्यक्तित्व तो आकर्षक था ही, साथ ही आत्मीय स्वभाव की वजह से लोग उसके करीब रहना चाहते। पारंपरिक पोशाक के साथ वह अपनी कमर में सदैव एक लकड़ी की तलवार बाँधे रहता। लोगों का मत था, बावजूद लकड़ी की होने पर, उस तलवार में अद्भुत दैवीय शक्ति थी। तताँरा अपनी तलवार को कभी अलग न होने देता। उसका दूसरों के सामने उपयोग भी न करता। किंतु उसके चर्चित साहसिक कारनामों के कारण लोग-बाग तलवार में अद्भुत शक्ति का होना मानते थे। तताँरा की तलवार एक विलक्षण रहस्य थी ।

एक शाम तताँरा दिनभर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र किनारे टहलने निकल पड़ा। सूरज समुद्र से लगे क्षितिज तले डूबने को था। समुद्र से ठंडी बयारें आ रही थीं। पक्षियों की सायंकालीन चहचहाटें शनैः शनैः क्षीण होने को थीं। उसका मन शांत था। विचारमग्न तताँरा समुद्री बालू पर बैठकर सूरज की अंतिम रंग-बिरंगी किरणों को समुद्र पर निहारने लगा। तभी कहीं पास से उसे मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया। गीत मानो बहता हुआ उसकी तरफ़ आ रहा हो। बीच-बीच में लहरों का संगीत सुनाई देता। गायन इतना प्रभावी था कि वह अपनी सुध-बुध खोने लगा। लहरों के एक प्रबल वेग ने उसकी तंद्रा भंग की। चैतन्य होते ही वह उधर बढ़ने को विवश हो उठा जिधर से अब भी गीत के स्वर बह रहे थे। वह विकल सा उस तरफ़ बढ़ता गया। अंततः उसकी नज़र एक युवती पर पड़ी जो ढलती हुई शाम के सौंदर्य में बेसुध, एकटक समुद्र की देह पर डूबते आकर्षक रंगों को निहारते हुए गा रही थी ? यह एक शृंगार गीत था।

उसे ज्ञात ही न हो सका कि कोई अजनबी युवक उसे निःशब्द ताके जा रहा है। एकाएक एक ऊँची लहर उठी और उसे भिगो गई। वह हड़बड़ाहट में गाना भूल गई। इसके पहले कि वह सामान्य हो पाती, उसने अपने कानों में गूँजती गंभीर आकर्षक आवाज़ सुनी।

''तुमने एकाएक इतना मधुर गाना अधूरा क्यों छोड़ दिया ?'' तताँरा ने विनम्रतापूर्वक कहा।

अपने सामने एक सुंदर युवक को देखकर वह विस्मित हुई। उसके भीतर किसी कोमल भावना का संचार हुआ । किंतु अपने को संयतकर उसने बेरुखी के साथ जवाब दिया।

''पहले बताओ ! तुम कौन हो, इस तरह मुझे घूरने और इस असंगत प्रश्न का कारण ? अपने गाँव के अलावा किसी और गाँव के युवक के प्रश्नों का उत्तर देने को मैं बाध्य नहीं। यह तुम भी जानते हो।''

तताँरा मानो सुध-बुध खोए हुए था। जवाब देने के स्थान पर उसने पुनः अपना प्रश्न दोहराया। ''तुमने गाना क्यों रोक दिया ? गाओ, गीत पूरा करो। सचमुच तुमने बहुत सुरीला कंठ पाया है।''

''यह तो मेरे प्रश्न का उत्तर न हुआ ?'' युवती ने कहा।

''सच बताओ तुम कौन हो ? लपाती गाँव में तुम्हें कभी देखा नहीं।''

तताँरा मानो सम्मोहित था। उसके कानों में युवती की आवाज़ ठीक से पहुँच न सकी। उसने पुनः विनय की, ''तुमने गाना क्यों रोक दिया ? गाओ न ?''

युवती झुँझला उठी। वह कुछ और सोचने लगी। अंततः उसने निश्चयपूर्वक एक बार पुनः लगभग विरोध करते हुए कड़े स्वर में कहा।

''ढीठता की हद है। मैं कब से परिचय पूछ रही हूँ और तुम बस एक ही राग अलाप रहे हो। गीत गाओ-गीत गाओ, आखिर क्यों ? क्या तुम्हें गाँव का नियम नहीं मालूम ?'' इतना बोलकर वह जाने के लिए तेज़ी से मुड़ी । तताँरा को मानो कुछ होश आया। उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। वह उसके सामने रास्ता रोककर, मानो गिड़गिड़ाने लगा।

''मुझे माफ़ कर दो। जीवन में पहली बार मैं इस तरह विचलित हुआ हूँ। तुम्हें देखकर मेरी चेतना लुप्त हो गई थी। मैं तुम्हारा रास्ता छोड़ दूँगा। बस अपना नाम बता दो।'' तताँरा ने विवशता में आग्रह किया। उसकी आँखें युवती के चेहरे पर केंद्रित थीं। उसके चेहरे पर सच्ची विनय थी।

''वा... मी... रो...'' एक रस घोलती आवाज़ उसके कानों में पहुँची।

''वामीरो... वा... मी... रो... वाह कितना सुंदर नाम है। कल भी आओगी न यहाँ ?'' तताँरा ने याचना भरे स्वर में कहा।

''नहीं... शायद... कभी नहीं।'' वामीरो ने अन्यमनस्कतापूर्वक कहा और झटके से लपाती की तरफ़ बेसुध-सी दौड़ पड़ी। पीछे तताँरा के वाक्य गूँज रहे थे।

''वामीरो... मेरा नाम तताँरा है। कल मैं इसी चट्टान पर प्रतीक्षा करूँगा... तुम्हारी बाट जोहूँगा... ज़रूर आना...''

वामीरो रुकी नहीं, भागती ही गई। तताँरा उसे जाते हुए निहारता रहा।

वामीरो घर पहुँचकर भीतर ही भीतर कुछ बेचैनी महसूस करने लगी। उसके भीतर तताँरा से मुक्त होने की एक झूठी छटपटाहट थी। एक झल्लाहट में उसने दरवाज़ा बंद किया और मन को किसी और दिशा में ले जाने का प्रयास किया। बार-बार तताँरा का याचना भरा चेहरा उसकी आँखों में तैर जाता। उसने तताँरा के बारे में कई कहानियाँ सुन रखी थीं। उसकी कल्पना में वह एक अद्‌भुत साहसी युवक था। किंतु वही तताँरा उसके सम्मुख एक अलग रूप में आया। सुंदर, बलिष्ठ किंतु बेहद शांत, सभ्य और भोला। उसका व्यक्तित्व कदाचित वैसा ही था जैसा वह अपने जीवन-साथी के बारे में सोचती रहती थी। किंतु एक दूसरे गाँव के युवक के साथ यह संबंध परंपरा के विरुद्ध था। अतएव उसने उसे भूल जाना ही श्रेयस्कर समझा। किंतु यह असंभव जान पड़ा। तताँरा बार-बार उसकी आँखों के सामने था । निर्निमेष याचक की तरह प्रतीक्षा में डूबा हुआ।

किसी तरह रात बीती। दोनों के हृदय व्यथित थे। किसी तरह आँचरहित एक ठंडा और ऊबाऊ दिन गुज़रने लगा । शाम की प्रतीक्षा थी। तताँरा के लिए मानो पूरे जीवन की अकेली प्रतीक्षा थी। उसके गंभीर और शांत जीवन में ऐसा पहली बार हुआ था। वह अचंभित था, साथ ही रोमांचित भी। दिन ढलने के काफ़ी पहले वह लपाती की उस समुद्री चट्टान पर पहुँच गया। वामीरो की प्रतीक्षा में एक-एक पल पहाड़ की तरह भारी था। उसके भीतर एक आशंका भी दौड़ रही थी। अगर वामीरो न आई तो ? वह कुछ निर्णय नहीं कर पा रहा था। सिर्फ़ प्रतीक्षारत था। बस आस की एक किरण थी जो समुद्र की देह पर डूबती किरणों की तरह कभी भी डूब सकती थी। वह बार-बार लपाती के रास्ते पर नज़रें दौड़ाता। सहसा नारियल के झुरमटों में उसे एक आकृति कुछ साफ़ हुई... कुछ और... कुछ और। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। सचमुच वह वामीरो थी। लगा जैसे वह घबराहट में थी। वह अपने को छुपाते हुए बढ़ रही थी। बीच-बीच में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाना न भूलती। फिर तेज़ कदमों से चलती हुई तताँरा के सामने आकर ठिठक गई। दोनों शब्दहीन थे। कुछ था जो दोनों के भीतर बह रहा था। एकटक निहारते हुए वे जाने कब तक खड़े रहे। सूरज समुद्र की लहरों में कहीं खो गया था। अँधेरा बढ़ रहा था। अचानक वामीरो कुछ सचेत हुई और घर की तरफ़ दौड़ पड़ी। तताँरा अब भी वहीं खड़ा था... निश्चल... शब्दहीन...।

दोनों रोज़ उसी जगह पहुँचते और मूर्तिवत एक-दूसरे को निर्निमेष ताकते रहते। बस भीतर समर्पण था जो अनवरत गहरा रहा था। लपाती के कुछ युवकों ने इस मूक प्रेम को भाँप लिया और खबर हवा की तरह बह उठी। वामीरो लपाती ग्राम की थी और तताँरा पासा का। दोनों का संबंध संभव न था। रीति अनुसार दोनों को एक ही गाँव का होना आवश्यक था। वामीरो और तताँरा को समझाने-बुझाने के कई प्रयास हुए किंतु दोनों अडिग रहे। वे नियमत: लपाती के उसी समुद्री किनारे पर मिलते रहे। अफ़वाहें फैलती रहीं।

कुछ समय बाद पासा गाँव में 'पशु-पर्व' का आयोजन हुआ। पशु-पर्व में हृष्ट-पुष्ट पशुओं के प्रदर्शन के अतिरिक्त पशुओं से युवकों की शक्ति परीक्षा प्रतियोगिता भी होती है। वर्ष में एक बार सभी गाँव के लोग हिस्सा लेते हैं। बाद में नृत्य-संगीत और भोजन का भी आयोजन होता है। शाम से सभी लोग पासा में एकत्रित होने लगे। धीरे-धीरे विभिन्न कार्यक्रम शुरू हुए। तताँरा का मन इन कार्यक्रमों में तनिक न था। उसकी व्याकुल आँखें वामीरो को ढूँढ़ने में व्यस्त थीं। नारियल के झुंड के एक पेड़ के पीछे से उसे जैसे कोई झाँकता दिखा। उसने थोड़ा और करीब जाकर पहचानने की चेष्टा की। वह वामीरो थी जो भयवश सामने आने में झिझक रही थी। उसकी आँखें तरल थीं। होंठ काँप रहे थे। तताँरा

को देखते ही वह फूट-फूटकर रोने लगी। ततााँरा विह्वल हुआ। उससे कुछ बोलते ही नहीं बन रहा था। रोने की आवाज़ लगातार ऊँची होती जा रही थी। ततााँरा किंकर्तव्यविमूढ़ था। वामीरो के रुदन स्वरों को सुनकर उसकी माँ वहाँ पहुँची और दोनों को देखकर आग बबूला हो उठी। सारे गाँववालों की उपस्थिति में यह दृश्य उसे अपमानजनक लगा। इस बीच गाँव के कुछ लोग भी वहाँ पहुँच गए। वामीरो की माँ क्रोध में उफन उठी। उसने ततााँरा को तरह-तरह से अपमानित किया। गाँव के लोग भी ततााँरा के विरोध में आवाज़ें उठाने लगे। यह ततााँरा के लिए असहनीय था। वामीरो अब भी रोए जा रही थी। ततााँरा भी गुस्से से भर उठा। उसे जहाँ विवाह की निषेध परंपरा पर क्षोभ था वहीं अपनी असहायता पर खीझ। वामीरो का दुःख उसे और गहरा कर रहा था। उसे मालूम न था कि क्या कदम उठाना चाहिए ? अनायास उसका हाथ तलवार की मूठ पर जा टिका। क्रोध में उसने तलवार निकाली और कुछ विचार करता रहा। क्रोध लगातार अग्नि की तरह बढ़ रहा था। लोग सहम उठे। एक सन्नाटा-सा खिंच गया। जब कोई राह न सूझी तो क्रोध का शमन करने के लिए उसमें शक्ति भर उसे धरती में घोंप दिया और ताकत से उसे खींचने लगा। वह पसीने से नहा उठा। सब घबराए हुए थे। वह तलवार को अपनी तरफ़ खींचते-खींचते दूर तक पहुँच गया । वह हाँफ रहा था। अचनाक जहाँ तक लकीर खिंच गई थी, वहाँ एक दरार होने लगी। मानो धरती दो टुकड़ों में बँटने लगी हो। एक गड़गड़ाहट-सी गूँजने लगी और लकीर की सीध में धरती फटती ही जा रही थी। द्वीप के अंतिम सिरे तक ततााँरा धरती को मानो क्रोध में काटता जा रहा था। सभी भयाकुल हो उठे। लोगों ने ऐसे दृश्य की कल्पना न की थी, वे सिहर उठे। उधर वामीरो फटती हुई धरती के किनारे चीखती हुई दौड़ रही थी-ततााँरा... ततााँरा... ततााँरा... उसकी करुण चीख मानो गड़गड़ाहट में डूब गई। ततााँरा दुर्भाग्यवश दूसरी तरफ़ था। द्वीप के अंतिम सिरे तक धरती को चाकता वह जैसे ही अंतिम छोर पर पहुँचा, द्वीप दो टुकड़ों में विभक्त हो चुका था। एक तरफ़ ततााँरा था दूसरी तरफ़ वामीरो। ततााँरा को जैसे ही होश आया, उसने देखा उसकी तरफ़ का द्वीप समुद्र में धँसने लगा है। वह छटपटाने लगा। उसने छलाँग लगाकर दूसरा सिरा थामना चाहा किंतु पकड़ ढीली पड़ गई। वह नीचे की तरफ़ फिसलने लगा । वह लगातार समुद्र की सतह की तरफ़ फिसल रहा था। उसके मुँह से सिर्फ़ एक ही चीख उभरकर डूब रही थी, ''वामीरो... वामीरो... वामीरो... वामीरो...'' उधर वामीरो भी ''ततााँरा... ततााँरा... ता. ताँ... रा'' पुकार रही थी।

ततााँरा लहूलुहान हो चुका था... वह अचेत होने लगा और कुछ देर बाद उसे कोई होश नहीं रहा। वह कटे हुए द्वीप के अंतिम भूखंड पर पड़ा हुआ था जो कि दूसरे हिस्से से संयोगवश जुड़ा था। बहता हुआ ततााँरा कहाँ पहुँचा, बाद में उसका क्या हुआ कोई नहीं जानता। इधर वामीरो पागल हो उठी। वह हर समय ततााँरा को खोजती हुई उसी जगह पहुँचती और घंटों बैठी रहती। उसने खाना-पीना छोड़ दिया। परिवार से वह एक तरह विलग हो गई। लोगों ने उसे ढूँढ़ने की बहुत कोशिश की किंतु कोई सुराग न मिल सका।

आज न ततााँरा है न वामीरो, किंतु उनकी यह प्रेमकथा घर-घर में सुनाई जाती है। निकोबारियों का मत है कि ततााँरा की तलवार से कार-निकोबार के जो टुकड़े हुए, उसमें दूसरा लिटिल अंदमान है जो कार-निकोबार से आज 96 कि.मी. दूर स्थित है। निकोबारी इस घटना के बाद दूसरे गाँवों में भी आपसी वैवाहिक संबंध करने लगे। ततााँरा-वामीरो की त्यागमयी मृत्यु शायद इसी सुखद परिवर्तन के लिए थी।

### शब्दार्थ-टिप्पण

**तत्पर** तैयार, उद्यत **बयार** हवा, पवन **बालू** रेती **स्मरण** याद **वक्त** समय, अवसर, मौका **निहारना** देखना **तंद्रा** आलस **चैतन्य** बाहोश, जाग्रत **विकल** व्याकुल **निःशब्द** चुपचाप, बिना बोले **विस्मित** आश्चर्यचकित **कंठ** गला **श्रेयस्कर** श्रेष्ठ, अधिक अच्छा **याचक** मांगनेवाला, भिखारी **निर्निमेष** टकटकी लगाकर, पलक झपकाए बिना **झुरमुट** झाड़ियों का समूह **किंकर्तव्यविमूढ़** क्या करें, क्या न करें, मन की ऐसी स्थिति; कुछ समझ में न आना, असमंजस में पड़ जाना

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**

(1) तताँरा किस गाँव का रहनेवाला था ?

(2) तताँरा शाम को घूमने के लिए कहाँ गया ?

(3) युवती (वामीरो) गाना क्यों भूल गई ?

(4) तताँरा ने युवती से बार-बार क्या प्रश्न किया ?

(5) तताँरा युवती के सामने क्यों गिड़गिड़ाने लगा ?

(6) निकोबारी घटना का गाँववालों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(7) वामीरो के गीत को सुनकर तताँरा के मन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए :**

(1) लोग तताँरा का आदर क्यों करते थे ?

(2) अंत में युवती ने कठोरतापूर्वक युवक से क्या कहा ?

(3) गिड़गिड़ाते हुए तताँरा ने युवती से क्या कहा ?

(4) पासा गाँव में पशु-पर्व का आयोजन किस प्रकार किया गया ?

(5) वामीरो किस गाँव में रहती थी ? उसका तताँरा के साथ विवाह क्यों नहीं हो सका ?

(6) वामीरो ने तताँरा को बेरुखी से क्या जवाब दिया ?

**3. विस्तारपूर्वक उत्तर लिखिए :**

(1) तताँरा को देखकर वामीरो की जो मन:स्थिति हुई, उसका अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

(2) तताँरा की तलवार के बारे में लोगों का क्या मत था ?

(3) तताँरा का अंत कैसे हुआ ?

(4) तताँरा और वामीरो की प्रेमकथा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(5) तताँरा का चरित्र-चित्रण अपने शब्दों में लिखिए।

**4. दिए गए विकल्पों में से सही शब्द चुनकर खाली जगह पूर्ण कीजिए :**

(1) तताँरा की तलवार .......................... से बनी हुई थी।

(A) लोहा (B) लकड़ी (C) ताँबा (D) पीतल

(2) कार-निकोबार से लिटिल अंदमान की दूरी .......................... किमी है।

(A) 196 (B) 296 (C) 100 (D) 96

(3) तताँरा ने अपनी तलवार .......................... में घोंप दी।

(A) पानी (B) धरती (C) शरीर (D) लकड़ी

(4) पासा गाँव में ........................ पर्व का आयोजन हुआ था।

(A) पशु (B) पक्षी (C) होली (D) दीपावली

**5. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्यप्रयोग कीजिए :**

(1) सुध-बुध खोना

(2) आग बबूला होना

(3) खुशी का ठिकाना न रहना

**6. निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द लिखिए :**

रुदन, अनायास, सुरीला, आकर्षक, स्मरण।

**7. सविग्रह समास का नाम लिखिए :**

भयाकुल, प्रतीक्षारत, विचारमग्न।

**8. विशेषण लिखिए :**

क्षिति, विश्वास, परंपरा, साहस, क्रोध, अंत, विचार।

**9. भाववाचक संज्ञा बनाइए :**

दैवीय, विलक्षण, सुंदर, तरल।

**विद्यार्थी-प्रवृत्ति**

- विद्यार्थी मानचित्र में अंदमान-निकोबार का स्थान ज्ञात करें।
- राजस्थानी लोककथाएँ प्राप्त करके पढ़िए।

**शिक्षक-प्रवृत्ति**

- शिक्षक वर्गखण्ड में अंदमान-निकोबार द्वीप समूह के बारे में जानकारी दें।

●